तापमान
अधिकतम 27 .0 डिग्री
न्यूनतम 11 .0 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार, 9 नवंबर 2025

11 कराटे एकेडमी के खिलाड़ियों ने जीते 6 पदक

12 खेलों से जीवन में आता है अनुशासन : मनजीत

खबर संक्षेप

मटिंडू में भूमि विवाद में युवक से मारपीट

खरखौदा। मटिंडू गांव में 2 व्यक्तियों ने पीटकर युवक को घायल कर दिया। विक्रम ने बताया कि उनका जमीन बंटवारे का केस सोनीपत न्यायालय में वीरेंद्र के साथ चला हुआ है। जब वह अपने खेत में गया हुआ था, तो वीरेंद्र और उसके साथी ने रास्ता रोककर उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। वीरेंद्र ने अपने हाथ में ली हुई नुकीली वस्तु मारकर उसे घायल कर दिया। इसके बाद वह उसे जान से मारने की धमकी देकर वहां से चला गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

खिजरपुर अहीर में लाठी-डंडों से हमला

गन्नौर। खिजरपुर अहीर गांव में एक व्यक्ति को लाठी डंडों से पीट कर बुरी तरह से घायल कर दिया। घायल ने मामले की शिकायत थाना गन्नौर में दी। शिकायत में खिजरपुर अहीर निवासी प्रकाश ने बताया कि वह शुक्रवार की सुबह पैदल सैर कर रहा था। जैसे ही वह कुलदीप के घर के पास पहुंचा, तभी एक गाड़ी रुकी और उसमें से 3-4 युवक उतरे। आरोप है कि उन्होंने डंडे से हमला कर दिया, जिससे प्रकाश के सिर, हाथ व पैर पर गंभीर चोटें आईं और वह खून से लथपथ हो गया। जिसके बाद हमलावर फरार हो गए। घर लौट कर वह अपने बेटे प्रमोद के साथ उपमंडल अस्पताल पहुंचा, जहां उसका इलाज कराया गया। प्रकाश ने इस हमले में रूपल, संजीव व अमर सिंह का हाथ होने की आशंका है। प्रकाश ने कहा कि उक्त परिवार से पहले से जमीन के विवाद व धमकियां चल रही थीं। पुलिस ने शिकायत पर तीनों आरोपितों पर केस दर्ज कर जांच शुरू की दी है।

संदिग्ध हालात में नवजात की मौत

सोनीपत। क्षेत्र में गर्भ में शिशु की मौत के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। ऐसा ही एक दर्दनाक मामला बहालगढ़ क्षेत्र से सामने आया है, जहां एक गर्भवती महिला के गर्भ में बच्चे की धड़कन अचानक बंद हो गई। जानकारी के अनुसार, बहालगढ़ निवासी आलोक की पत्नी नैन्सी नौवें महीने की गर्भवती थी। 15 नवंबर को उसके प्रसव की तारीख निर्धारित थी। शुक्रवार को अचानक तबीयत बिगड़ने पर परिजन उसे शहर के एक निजी अस्पताल में लेकर पहुंचे। वहां अल्ट्रासाउंड जांच के दौरान डॉक्टरों ने बताया कि गर्भ में बच्चे की धड़कन नहीं है। यह सुनकर परिजनों के होश उड़ गए। आलोक ने बताया कि उसने गर्भावस्था की शुरुआत से ही पत्नी की नियमित जांच करवाई थी और हर अल्ट्रासाउंड में सब कुछ सामान्य बताया गया था। उसने दुख जताते हुए कहा कि पहले भी आठ महीने के दौरान पत्नी के गर्भ में बच्चे की मौत हो चुकी थी।

यूपी के शामली में हुए हादसे में 4 व गुरुग्राम में एक युवक की मौत

सड़क हादसों में बुझ गए बरोदा के पांच चिराग, गांव में पसरा सन्नाटा

■ चार युवकों का एक ही चिता में किया अंतिम संस्कार ■ गांव में हर तरफ माहौल गमगीन

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत/गोहाना

उत्तरप्रदेश के शामली और गुरुग्राम शुक्रवार रात हुए सडक़ हादसों में गांव बरोदा के पांच चिराग बुझ गए। शामली हादसे में कार सवार चार युवकों की मौत हुई जो बरोदा मोर के थे। गुरुग्राम में बाइक डिवाइडर से टकराई जिसमें बरोदा खासा के युवक की मौत हुई। इनमें चार अपने माता-पिता के इकलौते बेटे थे। गांव बरोदा में मातम पसरा हुआ है। शामड़ी में जिन चार युवकों की मौत हुई उनका एक चिता में अंतिम संस्कार किया गया। गांव बरोदा में हर तरफ गमगीन माहौल है।

- गांव के चार युवक कार में सवार हो स्नान करने हरिद्वार जा रहे थे
- रास्ते में कार ढाबे के बाहर खड़े कैंटर से टकरा गई
- चारों युवक माता पिता के इकलौते बेटे थे

गांव बरोदा मोर का साहिल गांव के ही दोस्त विवेक, परम और आशीष के साथ स्विफ्ट कार में शुक्रवार रात को हरिद्वार में गंगा स्नान करने के लिए जा रहे थे। शुक्रवार देर रात को वे उत्तरप्रदेश के शामली में बाबरी थाना क्षेत्र में पानीपत-खटीमा हाईवे पर पहुंचे तो कार रेस्तरां के बाहर खड़े कैंटर से टकरा गई। हादसे में चारों की मौके पर ही मौत हो गई। 24 वर्ष का परम खेती करता था और वह दोनों बहनों का भाई था। उसके पिता आनंद का कई वर्ष पहले निधन हो चुका है। उसका राजस्थान की एक लडक़ी से रिश्ता तय हो चुका था और लगभग चार-पांच दिन बाद शादी होनी थी। 22 वर्ष का साहिल परिवार का इकलौता वारिस था।

वह लगभग तीन वर्ष पहले डाक विभाग में नौकरी लगा था और मोई माजरी में ड्यूटी थी। उसकी फरवरी 2025 में शादी हुई थी। 24 वर्ष के आशीष का शादी के लिए रिश्ता तय हो चुका था। दिसंबर 2025 में उसकी शादी होनी थी। उसकी एक बहन है जो आस्ट्रेलिया में पढ़ती है। पिता मेहरचंद की मौत हो चुकी है। विवेक कालेज में बीए की पढ़ाई कर रहा था जबकि उसका बड़ा भाई राहुल बीए पास कर चुका है। हादसे के बाद गांव में मातम पसर गया।

हादसे गमगीन परिवार के लोग

कार में फंसे शव

वहीं हादसे की जानकारी मिलते ही शामली की बाबरी थाना पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद कार में फंसे चारों युवकों की लाशों को खींचकर बाहर निकाला। शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। थाना प्रभारी राहुल सिसौदिया ने बताया कि कार के नंबर से परिजनों की पहचान कर उन्हें हादसे की सूचना दी गई।

परम की शादी तय था, घर में चल रही थी तैयारियां

हादसे में मारे गए परम अपने परिवार के इकलौते बेटे थे। पिता आनंद का पहले ही निधन हो चुका था। खेती-किसानी से घर का खर्च चलता था। उनकी शादी राजस्थान की युवती से तय थी और घर में सजावट चल रही थी, जो अब मातम में बदल गई। मां शीला देवी का रो-रोकर बुरा हाल है। ग्रामीण उन्हें सांत्वना देने में जुटे है।

साहिल डाक विभाग में कार्यरत था

साहिल डाक विभाग में कार्यरत थे और मोई माजरी पोस्ट ऑफिस में तैनात थे। उनकी फरवरी माह में शादी हुई थी। परिवार में नवविवाहित दंपति की खुशियां थीं, लेकिन यह हादसा सब कुछ छीन ले गया।

आशीष की शादी दिसंबर में होनी थी

आशीष के पिता मेहरचंद का निधन करीब डेढ़ दशक पहले हो चुका था। संघर्षों में पले-बढ़े आशीष ने पढ़ाई पूरी कर परिवार की जिम्मेदारी संभाली थी। उनकी भी शादी दिसंबर में तय थी। बहन ऑस्ट्रेलिया में पढ़ाई कर रही है, जिसे जब यह खबर मिली तो वह वहीं से बेसुध हो गई। विवेक के परिवार में पिता, मां और एक भाई राकेश हैं। विवेक भी परिवार का सहारा था। अब पूरे गांव में सिर्फ सन्नाटा है। बुजुर्गों ने कहा कि ऐसा दर्दनाक मंजर बरोदा ने पहले कभी नहीं देखा।

बरोदा खासा के अंकित की भी गई जान, गुरुग्राम में हादसा

दूसरी तरफ गांव बरोदा खासा के 22 वर्ष के अंकित की गुरुग्राम में शुक्रवार रात को सडक़ हादसे में मौत हो गई। उसकी बाइक डिवाइडर से टकरा गई थी। अंकित वहां पर एक कंपनी में नौकरी करता था और परिवार का खर्च चला रहा था। उसके पिता सतपाल का निधन हो चुका है। परिवार में अंकित व उसकी मां थे। अब अंकित की मौत होने से परिवार में केवल मां बच गई।

हादसे में नपा पार्षद के बड़े भाई की मौत, कृषि विभाग में था कार्यरत

गन्नौर। नगर पालिका वार्ड 8 के पार्षद विकास शर्मा के भाई की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। मृतक प्रवीन कुमार कोट मोहल्ला का रहने वाला था और कृषि विभाग में सोइल टेस्टिंग लैब में कार्यरत था। 6 नवंबर को वह अपने मामा जयप्रकाश के पास सोनीपत जाने के लिए घर से निकला था। इसके बाद वह घर नहीं लौटा। स्वजनों ने काफी तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। 7 नवंबर को सूचना मिली कि बड़ी थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई है। स्वजन उपमंडल अस्पताल के शवगृह पहुंचे तो शव की पहचान पार्षद विकास शर्मा के बड़े भाई प्रवीन कुमार के रूप में हुई। लड़सौली सीएनजी पंप के पास किसी अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पार्षद विकास शर्मा ने बताया कि यह हादसा अज्ञात वाहन चालक की लापरवाही के कारण हुआ है। थाना बड़ी पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया जिसके बाद शनिवार को प्रवीन कुमार का अंतिम संस्कार किया गया।

केएमपी कुंडली जीटी रोड पर युवक वाहन की चपेट में आया

सोनीपत। कुंडली स्थित केएमपी जीटी रोड पर शुक्रवार देर रात हुए सड़क हादसे में एक 26 वर्षीय युवक की मौत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि युवक की मौके पर ही मौत हो गई। राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल भिजवाया। पुलिस के अनुसार मृतक की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और आसपास के थानों में सूचना भेजी गई है ताकि युवक की शिनाख्त हो सके। पुलिस का कहना है कि मौके से मिले साक्ष्यों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि युवक किसी वाहन की चपेट में आया था। फिलहाल मामले की जांच जारी है और सीसीटीवी कैमरों की मदद से हादसे के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

श्मशान भूमि में युवती से दुष्कर्म

सोनीपत। शहर में काम करने वाली एक 20 वर्षीय युवती के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है, जिसने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया है। मामला मोहाना थाना क्षेत्र के एक गांव का है, जहां शुक्रवार देर शाम एक युवक ने युवती को सुनसान रास्ते से उठाकर श्मशान भूमि में ले जाकर उसके साथ दरिंदगी की। घटना के बाद से आरोपी फरार है और पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई है।

जानकारी के अनुसार, पीड़िता शहर के एक मॉल में नौकरी करती है। रोजाना की तरह शुक्रवार शाम को भी वह मॉल से काम खत्म कर अपने गांव लौट रही थी। बस स्टैंड से उतरने के बाद वह पैदल अपने गांव की ओर जा रही थी। गांव की तरफ जाने वाला रास्ता सुनसान और अंधेरा था, जहां से अक्सर लोग शाम के बाद कम ही गुजरते हैं। इसी दौरान घात लगाए बैठे एक युवक ने अचानक उसे पीछे से पकड़ लिया और जबरदस्ती खींचकर पास की श्मशान भूमि में ले गया।

धमकी देकर आरोपी फरार

श्मशान भूमि के अंदर आरोपी ने युवती का मुंह और पैर बांध दिए ताकि वह मदद के लिए आवाज न लगा सके। इसके बाद उसने युवती के साथ दुष्कर्म किया। जब पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपी ने उसके साथ मारपीट की और धमकी देकर मौके से फरार हो गया। पीड़िता किसी तरह श्मशान भूमि से बाहर निकली और राहगीरों की मदद से परिजनों को घटना की जानकारी दी।सूचना मिलते ही मोहाना थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और सबूत जुटाए। युवती को पहले नागरिक अस्पताल पहुंचाया गया, जहां से हालत गंभीर होने पर उसे रोहतक पीजीआई रेफर कर दिया गया। मोहाना थाना प्रभारी मोहन सिंह ने बताया कि पीड़िता के बयान के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया है। आरोपी की पहचान की जा रही है और उसकी गिरफ्तारी के लिए विशेष टीम गठित की गई है। आसपास लगे सीसीटीवी की फुटेज खंगाली जा रही है ताकि आरोपित की गतिविधियों का सुराग मिल सके।

रेलवे रोड पर सड़क हादसे में 35 वर्षीय युवक घायल

सोनीपत। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार युवक सड़क पार कर रहा था, तभी तेज रफ्तार वाहन ने उसे टक्कर मार दी। हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया। राहगीरों ने तत्परता दिखाते हुए घायल को तुरंत नागरिक अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए रोहतक पीजीआई रेफर कर दिया। फिलहाल युवक की पहचान नहीं हो पाई है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि वाहन चालक की पहचान कर उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

ट्रक से मोबाइल, रुपये व कागजात चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

सोनीपत। थाना मुरथल पुलिस ने ट्रक से मोबाइल फोन, रुपये और कागजात चोरी करने के मामले में चौथे आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपित के कब्जे से चोरी किए गए दो मोबाइल फोन भी बरामद किए हैं। गिरफ्तार आरोपित की पहचान इस्तकार उर्फ मोटा निवासी जहांगीरपुरी, दिल्ली के रूप में हुई है।

उसे प्रोडक्शन वारंट पर हिरासत में लिया गया। पुलिस के अनुसार, 29 अगस्त 2025 को वारिस निवासी गांव गुवारका, जिला नूंह ने शिकायत दर्ज कराई थी कि वह 28 अगस्त की सुबह लगभग चार बजे दिल्ली से पानीपत जा रहा था। जब वह इनएच -1 पर कुबेर ढाबा, मुरथल के पास पहुंचा तो नींद आने पर उसने ट्रक सड़क किनारे खड़ा कर लिया और सो गया। कुछ देर बाद ट्रक में आवाज सुनाई देने पर उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि दो व्यक्ति ट्रक के केबिन में चढ़े हुए हैं। उसे देखकर दोनों आरोपित दूसरी गाड़ी में बैठकर भाग गए। जब उसने जांच की तो पाया कि उसके दो मोबाइल फोन, दो एसबीआई एटीएम कार्ड, आधार कार्ड, पैन कार्ड और 930 रुपये चोरी हो चुके थे। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मुख्य सिपाही जोगिंद्र की टीम ने पहले ही तीन आरोपितो सलमान, शुभम , नदीम पुत्र शमीम को गिरफ्तार कर लिया था। अब चौथे आरोपित इस्तकार उर्फ मोटा को भी पकड़ा गया है।

संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे से लटका मिला युवक

सोनीपत। शहर के नाथूपुर क्षेत्र में शुक्रवार देर रात एक 28 वर्षीय युवक का शव संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे से लटका मिला। मृतक की पहचान नवोदय बिहार हाल निवासी गोविंद के रूप में हुई है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल भिजवाया। पुलिस ने बताया कि प्रारंभिक जांच में मामला आत्महत्या का लग रहा है, हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का खुलासा हो पाएगा। शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया गया है। साथ ही पुलिस ने विसरा सुरक्षित कर जांच के लिए भेज दिया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल मामले की जांच जारी है।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में दिखाया दमखम

इंटर कॉलेज कुश्ती में जीवीएम कॉलेज का जलवा छात्राओं ने एक रजत और दो कांस्य पदक जीते

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक स्पोर्ट्स कंपलेक्स में आयोजित लड़कियों की इंटर कॉलेज कुश्ती प्रतियोगिता में जीवीएम महाविद्यालय, सोनीपत की छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों की प्रतिभावान पहलवानों ने भाग लिया, जिनमें जीवीएम की छात्राओं ने अपने दमदार खेल और दृढ़ संकल्प से सबका ध्यान आकर्षित किया। जीवीएम महाविद्यालय की छात्राओं कि इस उपलब्धि से गदगद संस्था के अध्यक्ष डा. ओपी परूथी और प्रचार्या डा. मंजुला स्पाह ने सभी छात्राओं और टीम खेल प्रभारी अनु को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। महाविद्यालय की कोमल ने अंडर-72 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक जीतकर अपनी कुश्ती प्रतिभा का लोहा मनवाया। वहीं कीर्ति ने अंडर-68 किलोग्राम वर्ग में और निशिता ने अंडर-65 किलोग्राम वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। इन तीनों छात्राओं ने न केवल जीवीएम महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया, बल्कि जिले का नाम रोशन किया है।

सोनीपत। विजेता खिलाड़ियों के साथ प्राचार्य व अन्य।

हरियाणा ओलंपिक खेलों में छात्रा मन्नत ने जीता रजत

गन्नौर। हरियाणा ओलंपिक खेलों में राजकीय महाविद्यालय गन्नौर की छात्रा मन्नत ने 400 मीटर व 100 मीटर दौड़ में दूसरा स्थान हासिल किया है। यह प्रतियोगिता गुरुग्राम में 5 नवंबर को हुई थी। जिसमें प्रदेश भर के छात्र-छात्राओं ने हिस्सा किया था। रजत पदक विजेता मन्नत राजकीय महाविद्यालय गन्नौर की बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा है। महाविद्यालय में पहुंचने पर प्राचार्य सूरज प्रकाश यादव व स्टाफ ने मन्नत का स्वागत किया। प्राचार्य सूरज प्रकाश ने बताया कि यह महाविद्यालय के बड़ी उपलब्धि है।

नगरपालिका ने तैयारी किया एस्टीमेट

लहरी सिंह पार्क का बदलेगा स्वरूप 2.49 करोड़ से होगा सौंदर्यीकरण

गन्नौर। लंबे समय बाद नगरपालिका ने लहरी सिंह पार्क के सुंदरीकरण की महत्वाकांक्षी योजना पर काम शुरू कर दिया है। पार्क को आधुनिक रूप देने के लिए माडर्न डिजाइन तैयार किया है। पार्क के सुंदरीकरण के लिए करीब 2 करोड़ 49 लाख रुपये का एस्टीमेट तैयार किया गया है। नए डिजाइन में पार्क के चारों ओर चौड़े फुटपाथ, आकर्षक हरे लान और आरामदायक बैठने की व्यवस्था बनाई जाएगी। बच्चों के मनोरंजन के लिए एक नया किड जोन विकसित किया जाएगा, जिसमें आधुनिक झूले और खेल उपकरण लगाए जाएंगे। वहीं युवाओं के लिए क्रिकेट खेलने का अलग नेट एरिया तैयार किया जाएगा ताकि पार्क में खेल और मनोरंजन दोनों का संतुलन बना रहे। इस योजना के अनुसार पार्क में आने वाले लोगों के वाहन पार्किंग की भी व्यवस्था रखी गई है, जबकि वर्तमान में यहां पार्किंग की व्यवस्था नहीं है। पार्क में दो मुख्य प्रवेश द्वार बनाए जाएंगे, जिससे आवागमन सुगम होगा। इसके अलावा आकर्षक लाइटिंग सिस्टम, सार्वजनिक शौचालय और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाने की भी योजना है।

गन्नौर को अलग पहचान दिलाएगा पार्क

नगर पालिका अध्यक्ष अरुण त्यागी ने बताया कि यह योजना शहर के लोगों को बेहतर पर्यावरण और सुविधाएं देने के लिए तैयार की गई है। पार्क के नवीनीकरण को लेकर एस्टिमेट तैयार कर लिया गया है। एस्टिमेट मंजूर होते ही टेंडर लगाने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। यह पार्क गन्नौर को अलग पहचान दिलाएगा। यह न केवल लोगों के सैर-सपाटे का केंद्र बनेगा बल्कि गन्नौर की सुंदरता में भी चार चांद लगाएगा।

मेयर ने कई जगह करवाई सफाई

शहर को स्वच्छ बनाने के लिए सबको मिलकर काम करना होगा

सोनीपत। तुम कूड़ा फैलाते रहो, हम साफ करते रहें। इस तरह तो शहर स्वच्छ नहीं हो सकता। स्वच्छता के लिए सबको मिलकर काम करना होगा। बाजार एवं घरों से कूड़ा उठाने के लिए नगर निगम की गाड़ियां चल रही है उसमें कूड़ा डालो। क्या हम अपने घरों के बाहर भी इसी तरह कूड़ा डाले रखते हैं, शहर को भी अपना घर समझो। यह अपील नगर निगम मेयर राजीव जैन ने हर शनिवार स्वच्छ, सुंदर एवं स्वस्थ सोनीपत अभियान के तहत छोटू राम चौक से गोहाना बाईपास, फाजिलपुर मोड से साफ सफाई करवाते हुए दुकानदारों एवं रेहड़ी वालों से की। उन्होंने कहा कि सभी अपने घर में और ऑफिस में भी तो डस्टबिन रखते हैं, तो फिर दुकान या रेहड़ी पर रखने में क्या हर्ज है। मेयर राजीव जैन ने कहा कि विदेशों की तर्ज पर शहर को साफ सुथरा देखना चाहते हो, तो हर कोई स्वच्छता प्रहरी बन जाओ, और सड़क व गलियों में गंदगी फैलाने वाले को शर्मिंदा कर स्वच्छता के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि स्वछता हमारे सस्वास्थ्य से भी जुड़ी हुई है, गंदगी से बीमारियां भी पनपतीं हैं। अभियान में एडवोकेट नकीन मेहरा, शैलेंद्र तोमर, समीर शर्मा, जोगिंदर मेहरा, सुमित, एडवोकेट विकास, विक्की शर्मा, सुपरवाइजर योगेश, सुरेंद्र मलिक आदि शामिल रहे।

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय, आपको ग्रोथ ऑप्शन और डिविडेंड ऑप्शन में से एक का चयन करना होता है। ये दोनों ऑप्शन आपके निवेश के उद्देश्य और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करते हैं।

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ या डिविडेंड ऑप्शन में से बेहतर क्या और क्यों?

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों के लिए क्या रहेगा फायदे का सौदा ग्रोथ और डिविडेंड किसमें मिलेगा ज्यादा फायदा, फैसला गलत हो जाए तो कैसे स्विच करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय कई बार निवेशकों को यह कनफ्यूजन हो सकता है कि किसी स्कीम का ग्रोथ ऑप्शन चुनें या डिविडेंड ऑप्शन बेहतर रहेगा? सही ऑप्शन का चुनाव आपके रिटर्न को बढ़ा सकता है, जबकि गलत सेलेक्शन से आपका मुनाफा घट सकता है। यही वजह है कि समझदारी से लिया गया फैसला आपके इनवेस्टमेंट की ग्रोथ को कई गुना बढ़ा सकता है। आमतौर पर ग्रोथ विकल्प बेहतर होता है, क्योंकि यह लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज के कारण अधिक धन बनाता है, जबकि डिविडेंड विकल्प उन निवेशकों के लिए बेहतर है जो नियमित आय चाहते हैं। ग्रोथ में, फंड लाभ को फिर से निवेश करता है, जिससे निवेश का मूल्य समय के साथ बढ़ता है, जबकि डिविडेंड में, फंड आय वितरित करता है, जिससे चक्रवृद्धि ब्याज का प्रभाव कम हो जाता है। आइए इस रिग्र्ट में जानते हैं दोनों ऑप्शंस का फर्क, फायदे और स्विच करने के नियम।

ग्रोथ ऑप्शन के फायदे

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ ऑप्शन में आपके निवेश पर जो भी मुनाफा बनता है, वो आपको कैश में नहीं दिया जाता है, बल्कि, वह पैसा दोबारा उसी म्यूचुअल फंड फिर से इनवेस्ट कर दिया जाता है। इसका फायदा यह होता है कि आपके मुनाफे पर भी मुनाफा जुड़ने लगता है, जिससे कंपाउंडिंग का बेनिफिट मिलता है। समय के साथ कंपाउंडिंग की यह ताकत आपकी पूंजी को तेजी से बढ़ाने में मदद करती है. यही वजह है कि ग्रोथ ऑप्शन में फंड की नेट एसेट वैल्यू यानी एनएवी ज्यादा तेजी से बढ़ती है।

डिविडेंड ऑप्शन क्या है

पहले जिसे डिविडेंड ऑप्शन कहा जाता था, उसे अब 'इनकम डिस्ट्रीब्यूशन कम कैपिटल विदड्रॉल' ऑप्शन यानी आईडीसीडब्ल्यू का नाम दे दिया गया है। इसमें फंड से मिलने वाला मुनाफा समय-समय पर निवेशकों में बांट दिया जाता है। हालांकि पेआउट की यह फ्रीक्वेंसी फिक्स नहीं होती, लेकिन जब भी ऐसा भुगतान किया जाता है, फंड की एनएवी घट जाती है। इसका मतलब है कि लंबे समय में आपकी पूंजी उतनी तेजी से नहीं बढ़ पाती जितनी ग्रोथ ऑप्शन में बढ़ सकती है। सेबी ने डिविडेंड ऑप्शन का नाम बदलकर आईडीसीडब्ल्यू इसलिए रखा, ताकि निवेशकों को यह समझ में आए कि इस पेआउट में कुछ हिस्सा आपकी अपनी पूंजी से निकलता है. यह कोई गारंटीड इनकम जैसा

विकल्प नहीं हैं।

कौन सा विकल्प सही

ग्रोथ और डिविडेंड ऑप्शन में आपके लिए कौन सा विकल्प सही है, यह पूरी तरह आपके आर्थिक लक्ष्य और निवेश के मकसद से तय होता है। अगर आप रिटायर्ड हैं या किसी वजह से रेगुलर इनकम (आपके लिए जरूरी है, तो आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन आपके लिए बेहतर हो सकता है, लेकिन अगर आप लंबी अवधि के लिए पैसे लगा रहे हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा लगातार बढ़ता रहे, तो ग्रोथ ऑप्शन सही रहेगा। लंबे समय में देखा जाए तो ग्रोथ ऑप्शन आमतौर पर बेहतर रिटर्न देता है, क्योंकि इसमें कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। वहीं, आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन उन निवेशकों के लिए है जो समय-समय पर पैसा निकालना चाहते हैं और रेगुलर इनकम चाहते हैं।

गलत विकल्प चुन लिया हो तो क्या करें?

म्यूचुअल फंड में सही ऑप्शन चुनना उतना ही जरूरी है जितना सही फंड चुनना. दोनों की अपनी-अपनी खूबियां और सीमाएं हैं।

कई निवेशक शुरुआत में रेगुलर इनकम पाने के लिए या किसी कनफ्यूजन की वजह से आईडीसीडब्ल्यू चुन लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें महसूस होता है कि अगर उनका पूरा मुनाफा फंड में ही दोबारा निवेश होता, तो लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिल सकता था। ऐसा होने पर निवेशक अपने पैसों को ग्रोथ ऑप्शन में स्विच कर सकते हैं, लेकिन उससे पहले म्यूचुअल फंड पर लागू होने वाले टैक्स के नियमों और एग्जिट लोड के असर को समझना जरूरी है।

आईडीसीडब्ल्यू से ग्रोथ ऑप्शन में कैसे स्विच करें

अगर आप अपने म्यूचुअल फंड इनवेस्टमेंट को डिविडेंड या आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन से ग्रोथ ऑप्शन में स्विच करना चाहते हैं, तो इसके लिए एक फॉर्म भरना होता है। फंड स्विचिंग की यह प्रॉसेस आमतौर पर 24 घंटे में पूरी हो जाती है, लेकिन याद रखें कि इस तरह का स्विच रिडेम्पशन और नई खरीदारी दोनों ही माना जाता है। इसका मतलब है कि आपको यूनिट होल्ड करने की अवधि के हिसाब से एग्जिट लोड और कैपिटल गेन्स टैक्स देना पड़ सकता है। इसलिए फैसला करने से पहले पूरी टैक्स देनदारी को जरूर समझ लें।

निवेश का उद्देश्य लंबी अवधि के लिए पूंजी की वृद्धि

डिविडेंड : डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है, बल्कि इसे फंड में पुनर्निवेश किया जाता है।
निवेश की वृद्धि : निवेश की वृद्धि होती है, जिससे आपका मूल निवेश बढ़ता है।
कर लाभ : ग्रोथ ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है।

समझदारी
बिजनेस डेस्क

डिविडेंड ऑप्शन

- **निवेश का उद्देश्य :** नियमित आय प्राप्त करना।
- **डिविडेंड :** डिविडेंड का भुगतान किया जाता है, जिससे आपको नियमित आय मिलती है।
- **निवेश की वृद्धि :** निवेश की वृद्धि कम होती है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।
- **कर लाभ :** डिविडेंड ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ नहीं मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।

कब ग्रोथ ऑप्शन चुनें

- **लंबी अवधि के निवेशक :** यदि आप लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं और पूंजी की वृद्धि करना चाहते हैं।
- **नियमित आय की आवश्यकता नहीं :** यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता नहीं है और आप अपने निवेश को बढ़ाना चाहते हैं।

कब डिविडेंड ऑप्शन चुनें

- नियमित आय की आवश्यकता : यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता है और आप अपने निवेश से आय प्राप्त करना चाहते हैं।
- अल्पकालिक निवेशक : यदि आप अल्पकालिक निवेश करना चाहते हैं और नियमित आय प्राप्त करना चाहते हैं।

गलत फंड चुनने से बचना चाहते हैं तो निवेश से पहले जान लें ये टिप्स

- बाजार में मौजूद 250 से ज्यादा ईटीएफ में से अपने लिए सही फंड चुनना आसान नहीं
- लक्ष्य और कुछ बातों को ध्यान में रखेंगे तो सही फंड में निवेश करना आसान हो जाएगा

अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती
अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका रिटर्न पर बुरा असर पड़ेगा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। वजह साफ है। ईटीएफ बेहद कम खर्च में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने का मौका देते हैं। इसके साथ ही उन्हें एक्सचेंज पर जाकर स्टॉक्स की तरह आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है, लेकिन बाजार में 250 से ज्यादा ईटीएफ मौजूद हैं। ऐसे में अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती हो सकता है। अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका आपके रिटर्न पर बुरा असर पड़ सकता है। अगर आप अपने निवेश के लिए सही ईटीएफ चुनना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ ऐसे ही टिप्स जो आपको सही फंड चुनने में मदद करेंगे।

आपका ईटीएफ किस इंडेक्स को ट्रैक करता है

हर ईटीएफ किसी न किसी इंडेक्स को ट्रैक करता है। यानी आप इनडायरेक्ट तौर पर उस इंडेक्स में शामिल कंपनियों या एसेट्स में निवेश कर रहे होते हैं। मसलन, अगर आपका ईटीएफ निफ्टी 50 या सेंसेक्स को फॉलो करता है, तो आप उनके जरिये देश की टॉप कंपनियों की हिस्सेदारी खरीद रहे होते हैं। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि आपका चुना हुआ ईटीएफ किस इंडेक्स से जुड़ा है और क्या वह आपके निवेश के उद्देश्य से मेल खाता है। सही इंडेक्स का चुनाव लंबे समय में बेहतर रिटर्न की दिशा तय करता है।

ट्रैकिंग एरर पर रखिए खास नजर

हर ईटीएफ कोशिश करता है कि वह अपने बेंचमार्क इंडेक्स को हूबहू फॉलो करे, लेकिन हर बार ऐसा संभव नहीं होता. इस छोटे फर्क को ही ट्रैकिंग एरर कहा जाता है। अगर यह एरर कम है, तो ईटीएफ अपने इंडेक्स के रिटर्न से काफी हद तक मेल खाता है। वहीं, अगर ट्रैकिंग एरर ज्यादा है, तो आपके रिटर्न उम्मीद से कम हो सकते हैं। इसलिए हमेशा ऐसे ईटीएफ को चुनना बेहतर रहता है, जिसका ट्रैकिंग एरर कम से कम हो।

लिक्विडिटी यानी खरीदना-बेचना कितना आसान

निवेश का मकसद सिर्फ रिटर्न पाना नहीं होता, बल्कि आपके पास जरूरत पड़ने पर पैसा निकालने की बेहतर सुविधा होनी भी जरूरी है। इसलिए ईटीएफ की लिक्विडिटी बेहद अहम होती है। अगर किसी ईटीएफ में रोजाना अच्छा कारोबार होता है, यानी खरीदने और बेचने वालों की संख्या काफी है, तो उसे कभी भी बेचना आसान रहेगा, लेकिन अगर फंड का ट्रेडिंग वॉल्यूम कम है, तो आपको जरूरत पड़ने पर कम समय में अपनी यूनिट्स बेचने में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। हमेशा ऐसे ईटीएफ का चुनाव करें जिसे जरूरत पड़ने पर आसानी से खरीदा या बेचा जा सके।

ईटीएफ के प्राइस और एनएवी में फर्क को समझें

ईटीएफ की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) यह बताती है कि उसमें शामिल एसेट्स का मौजूदा मूल्य कितना है। आम तौर पर ईटीएफ का मार्केट प्राइस उसके एनएवी के आसपास होना चाहिए, लेकिन कई बार मार्केट प्राइस इससे काफी ऊपर या नीचे भी ट्रेड करता है। अगर ईटीएफ का प्राइस उसकी एनएवी से काफी ज्यादा है, तो आप जरूरत से ज्यादा पैसे चुका रहे हैं। इसलिए निवेश से पहले हमेशा देखें कि ईटीएफ की कीमत उसकी एनएवी के करीब हो, ताकि आपका पैसा सही वैल्यू पर निवेश किया जा सके।

एक्सपेंस रेशियो पर ध्यान देना न भूलें

हर ईटीएफ को चलाने के लिए मैनेजमेंट कॉस्ट लगती है, जिसे एक्सपेंस रेशियो कहा जाता है। इसका आंकड़ा पहली नजर में भले ही बेहद छोटा लगे, लेकिन लंबे समय में यह आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी ईटीएफ का एक्सपेंस रेशियो 0.05% है और दूसरे का 0.10%, तो शुरुआत में फर्क छोटा दिखेगा, पर साल दर साल यही फर्क आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। इसलिए बाकी बातें समान रहने पर हमेशा उसी ईटीएफ का चुनाव करें, जिसका एक्सपेंस रेशियो कम हो। सही ईटीएफ का चुनाव करना किसी भी निवेशक के लिए बड़ा फैसला होता है, क्योंकि इसी से तय होता है कि आगे चलकर आपका निवेश कितना स्टेबल और फायदेमंद रहेगा।

सही फैसला लें

अगर आप ऊपर बताई गई बातों-बेंचमार्क इंडेक्स, ट्रैकिंग एरर, लिक्विडिटी, प्राइस-एनएवी डिफरेंस और एक्सपेंस रेशियो - को ध्यान में रखकर फंड चुनेंगे, तो सही फैसला लेना आसान होगा। याद रखें, सारे ईटीएफ एक जैसे नहीं होते। इसलिए जल्दबाजी में नहीं, बल्कि समझदारी के साथ सही ईटीएफ चुनें।

क्या है ईटीएफ

ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश उत्पाद है जो शेयर बाजार में ट्रेड किया जाता है। यह एक म्यूचुअल फंड की तरह होता है, लेकिन इसे शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है जैसे कि शेयर।

ईटीएफ की विशेषताएं

1. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
2. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर, बॉन्ड, या अन्य सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
3. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर म्यूचुअल फंड की तुलना में कम होती है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के प्रकार

1. **इक्विटी ईटीएफ :** ये ईटीएफ शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
2. **बॉन्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ बॉन्ड में निवेश करते हैं।
3. **सेक्टोरल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।
4. **इंटरनेशनल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विदेशी शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
5. **गोल्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ सोने में निवेश करते हैं।

ईटीएफ के लाभ

1. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर या सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
2. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर कम होती है।
3. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के जोखिम

1. **मार्केट जोखिम :** ईटीएफ के मूल्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है।
2. **लिक्विडिटी जोखिम :** ईटीएफ की लिक्विडिटी कम हो सकती है।
3. **ट्रैकिंग एरर :** ईटीएफ का प्रदर्शन उसके अंडरलाइंग इंडेक्स के प्रदर्शन से भिन्न हो सकता है।

आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी तो यह सही कदम

कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी लोन इंश्योरेंस बेचते हैं

एजेंट की बातों से न हों कनफ्यूज, लोन का इंश्योरेंस का कदम सही या गलत ऐसे समझें

सलाह
बिजनेस डेस्क

जब आप कोई लोन लेते हैं, तो बैंक या एजेंट अक्सर लोन इंश्योरेंस लेने की सलाह देते हैं, लेकिन क्या वाकई इसकी जरूरत होती है? हर स्थिति में नहीं। लोन इंश्योरेंस समझदारी का कदम तब है जब आपकी आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी है, लेकिन कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी इसे बेचते हैं। इसलिए आप एजेंट की बातों के कनफ्यूज न हों और अपने लिए सही विकल्प चुनें। तभी आप लोन लेकर खुद को सुरक्षित कर सकते हैं, वरना कई यह आपके गले की फांस भी बन सकता है। अक्सर जब आप बैंक या एनबीएफसी से पर्सनल लोन, होम लोन या कार लोन लेने जाते हैं, तो एजेंट आपको एक और प्रोडक्ट बेचने की कोशिश करता है- लोन इंश्योरेंस वह कहता है कि अगर किसी वजह से आप लोन नहीं चुका पाए तो यह इंश्योरेंस आपकी ईएमआई भर देगा या आपके परिवार पर बोझ नहीं डालेगा। पहली नजर में यह बात सही लगती है, लेकिन असल में हर बार लोन इंश्योरेंस लेना फायदेमंद नहीं होता है। कई बार यह सिर्फ बैंक या एजेंट का कमिशन कमाने का तरीका होता है। इसलिए बिना समझे इंश्योरेंस खरीदना नुकसानदायक हो सकता है।

लोन इंश्योरेंस होता क्या है?

लोन इंश्योरेंस एक ऐसी पॉलिसी होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि अगर किसी वजह से लोन लेने वाला व्यक्ति ईएमआई नहीं भर पाता, तो इंश्योरेंस कंपनी बाकी ईएमआई का भुगतान करेगी। इसका मकसद बैंक या लेंडर को डिफॉल्ट रिस्क से बचाना होता है, लेकिन ध्यान दीजिए कि यह सुरक्षा आपके परिवार के लिए नहीं, बल्कि बैंक के लिए होती है। यानी बैंक को तो उसका पैसा मिल जाता है, पर आपके परिवार को सीधा फायदा नहीं होता।

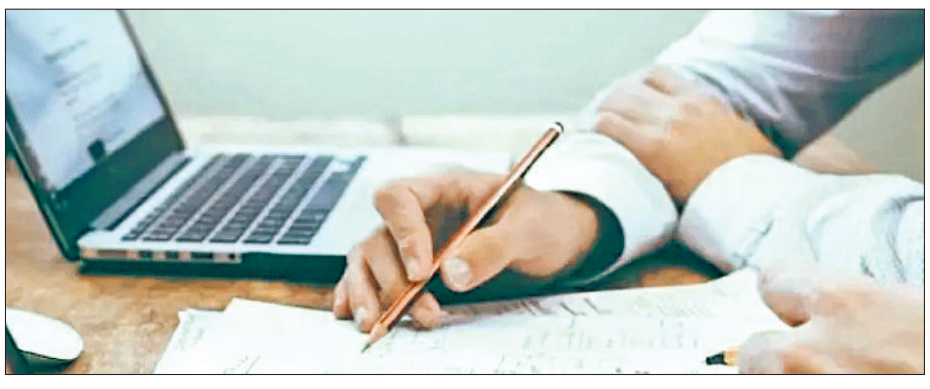

कब जरूरी है लोन इंश्योरेंस?

हर लोन के साथ इंश्योरेंस जरूरी नहीं, लेकिन कुछ परिस्थितियों में यह समझदारी भरा कदम हो सकता है।

1. **होम लोन या बड़ी रकम वाला लोन :** अगर आपने लंबी अवधि के लिए होम लोन या बिजनेस लोन लिया है, तो इंश्योरेंस आपको और परिवार को राहत दे सकता है।
2. **अगर आप सोल ब्रेडविनर हैं :** अगर परिवार में कमाने वाले आप ही हैं और किसी कारणवश आपकी मृत्यु हो जाए या नौकरी छूट जाए, तो यह पॉलिसी बाकी लोन चुका सकती है।
3. **अगर आपका प्रोफेशन रिस्की है :** जो लोग खतरनाक कामों में हैं या फिर मेडिकल इंडस्ट्री में हैं, तो उनके लिए यह इंश्योरेंस जरूरी है।

कब नहीं लेना चाहिए लोन इंश्योरेंस?

कई बार बैंक या एजेंट आपको डर दिखाकर यह पॉलिसी थमा देते हैं, लेकिन हर केस में इसकी जरूरत नहीं होती।

1. **अगर आपके पास लाइफ इंश्योरेंस पहले से है :** अगर आपके पास पर्याप्त टर्म इंश्योरेंस है, तो अलग से लोन इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं है। आपका टर्म प्लान परिवार को पूरी सुरक्षा देता है।
2. **अगर लोन छोटी अवधि का है :** जैसे पर्सनल लोन 1-2 साल के लिए हो या कार लोन बहुत छोटी रकम का हो, तो उस पर इंश्योरेंस का प्रीमियम देना बेकार है।
3. **अगर ईएमआई आपकी इनकम का छोटा हिस्सा है :** जब ईएमआई आपकी इनकम का सिर्फ 10-15% हो, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस का खर्च आपकी जेब पर बोझ बन सकता है।

एजेंट से कनफ्यूज ना हों

एजेंट या बैंक अधिकारी कई बार कहते हैं कि बिना इंश्योरेंस लोन अप्रूव नहीं होगा, लेकिन यह पूरी तरह गलत है। आरबीआई और इरडा दोनों ने साफ किया है कि लोन इंश्योरेंस कभी भी अनिवार्य नहीं होता। अक्सर ग्राहक कनफ्यूज होकर पॉलिसी ले लेता है, जो बाद में बेकार साबित होती है।

कितना होता है लोन इंश्योरेंस का प्रीमियम?

अगर आप 10 लाख रुपये का लोन करीब 5 साल के लिए लेते हैं तो उस पर आपको 10-12 हजार रुपये का इंश्योरेंस प्रीमियम लग सकता है। यह प्रीमियम कम-ज्यादा हो सकता है और आप इस पर बारगेनिंग भी कर सकते हैं। यह प्रीमियम या तो आपसे एकमुश्त लिया जाता है या लोन राशि में जोड़ दिया जाता है। मतलब, कुछ मामलों में आप उसके ऊपर भी ब्याज चुकाते हैं।

क्या लोन इंश्योरेंस टैक्स बेनिफिट देता है?

कुछ लोन इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स बेनिफिट मिल सकता है, लेकिन यह इंश्योरेंस के प्रकार पर निर्भर करता है। अगर पॉलिसी लाइफ इंश्योरेंस कैटेगरी में आती है, तो सेक्शन 80सी के तहत छूट मिल सकती है, लेकिन अगर यह केवल क्रेडिट प्रोटेक्शन पॉलिसी है, तो टैक्स बेनिफिट नहीं मिलता।

सही निर्णय कैसे लें?

1. **तुलना करें :** विभिन्न इंश्योरेंस कंपनियों के प्रीमियम और कवरेज की तुलना करें।
2. **एजेंट की बातों पर आंख मूंदकर भरोसा न करें :** हर सलाह के पीछे कमीशन छिपा हो सकता है।
3. **अपनी जरूरत देखें :** अगर आपका लोन छोटा है या पहले से टर्म इंश्योरेंस है, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस की जरूरत नहीं।
4. **पॉलिसी डॉक्युमेंट पढ़ें :** साइन करने से पहले उसके सभी दस्तावेजों को जरूर समझें। यानी किन परिस्थितियों में क्लेम नहीं मिलेगा।

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट है, लेकिन हर किसी के लिए जरूरी नहीं। अगर आपके ऊपर बड़ा लोन है, परिवार आप पर निर्भर है या आपकी हेल्थ रिस्की है, तो इसे लेना समझदारी है, लेकिन अगर आपका लोन छोटा है, ईएमआई कंट्रोल में है और टर्म इंश्योरेंस पहले से है, तो एजेंट की बातों में आकर इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं। हमेशा याद रखें कि लोन इंश्योरेंस बैंक के लिए सुरक्षा है, आपके लिए नहीं।

खबर संक्षेप

स्वास्थ्य जांच शिविर में अढ़ाई सौ लाभान्वित

खरखौदा। कन्या महाविद्यालय, में एन.एस.एस, महिला प्रकोष्ठ व कम्युनिटी आउटरीच सेल के सामूहिक तत्वावधान में स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें उजाला सिग्नस अस्पताल, सोनीपत के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने सेवाएँ प्रदान कीं। लगभग 250 लोगों ने स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाया। कम्युनिटी आउटरीच सेल के सदस्य डॉ. पूनम यादव, डॉ. सुषमा एवं डॉ. मीनाक्षी ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

कैंसर में बहुत लाभप्रद न्यूक्लियर मेडिसिन

खरखौदा। राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस पर न्यूक्लियर मेडिसिन स्पेशलिस्ट डॉ. प्रवीन कुंडू ने बताया कि हम उस महान मैडम मेरी क्यूरी को नमन करते हैं, जिनकी खोजों ने पूरी मानवता को रोशनी दी। रेडियोएक्टिविटी की रोशनी ने सिर्फ विज्ञान को बदला बल्कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से लड़ने की दिशा भी तय की। न्यूक्लियर मेडिसिन चिकित्सक के रूप में वह उसी रेडियोएक्टिविटी का उपयोग कैंसर के निदान और उपचार में कर रही हैं।

कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव में पांच विद्यार्थी चयनित

सोनीपत। हिंदू इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में इंडिया मार्ट द्वारा अयोजित कैंपस प्लेसमेंट में ब्रांच मैनेजर प्रिंस जैन और पार्टनर पंकज मल्होत्रा विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया गया। जिसमें पांच विद्यार्थी चयनित हुए। ये अवसर छात्रों के लिए कैरियर की दिशा में एक महत्तवपूर्ण और सराहनीय कदम रहा। जहां उन्हें प्रतिष्ठित कंपनी में कार्य करने का मौका मिला। कॉलेज निर्देशिका डॉ. शिवानी ने इंडियामार्ट का बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन

सोनीपत। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सोनीपत द्वारा शनिवार को नेशनल लीगल सर्विसेज डे के उपलक्ष्य में 3 जागरूकता शिविर/ जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दून वरिष्ठ माध्यमिक विधालय आईटीआई चौक सोनीपत में अधिवक्ता रीता धनखड़ द्वारा, राजकीय वमावि गांव अकबरपुर बरोटा सोनीपत में अधिवक्ता आरती द्वारा तथा राजकीय वमावि गांव अटेरना सोनीपत में अधिवक्ता अनुराधा पुनिया द्वारा विशेष कानूनी जागरूकता शिविर/ जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजकीय महिला कॉलेज में दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

मानसिक और शारीरिक विकास के लिए खेल अत्यंत आवश्यक

विधायक निखिल मदान ने विजेता छात्राओं को किया पुरस्कृत

जैवलिन थ्रो में टीना तो हाई जंप में आस्था प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

राजकीय महिला महाविद्यालय सोनीपत में 7 और 8 नवंबर को खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत खेल प्रभारी डॉ सतीश मलिक द्वारा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ नरेश आंतिल को बुके भेंट कर स्वागत से हुई। प्राचार्य डॉ आंतिल ने प्रतियोगिता का शुभारंभ किया और छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि मानसिक और शारीरिक विकास के लिए खेल अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने छात्राओं को खेल भावना और अनुशासन के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ सुभाष सिसोदिया और डॉ प्रवीन ने किया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि सोनीपत विधानसभा क्षेत्र के विधायक निखिल मदान रहे, जिन्होंने विजेता छात्राओं को पुरस्कृत किया। अपने संबोधन में विधायक ने कहा कि खेल अनुशासन और आत्मविश्वास बढ़ाने का सर्वोत्तम माध्यम हैं तथा इससे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जैवलिन थ्रो में टीना ने पहला, सानया ने दूसरा और रितु ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। हाई जंप में आस्था प्रथम, टीना द्वितीय और सानया तृतीय रही। लॉन्ग जंप में दीपिका ने पहला, सानया (बीकॉम प्रथम वर्ष) ने दूसरा और सानया (बीकॉम द्वितीय वर्ष) ने तीसरा स्थान हासिल किया।

सोनीपत। विजेता विद्यार्थियों के साथ विधायक एवं अन्य। *फोटो :हरिभूमि*

ये रहे विजेता

डिस्कस थ्रो में टीना, दीपिका और शिवानी क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहीं। 200 मीटर दौड़ में आस्था प्रथम, गायत्री द्वितीय और सानया तृतीय रही, जबकि शॉट पुट में दीपिका, पिंकी और पूनम ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ वंदना नासा ने सफल आयोजन के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। इस आयोजन में राजकीय महाविद्यालय बड़ौदा से डॉ. प्रदीप कुंडू और खरखोदा से डॉ दिनेश का विशेष सहयोग रहा। प्रतियोगिता को सफल बनाने में टीचिंग और नॉन-टीचिंग स्टाफ का भी सराहनीय योगदान रहा।

गोहाना। पदक विजेता खिलाड़ी स्कूल के शिक्षकों व कोच के साथ।

बाल भारती स्कूल ने जीते 6 पदक

गोहाना। हरियाणा ओलंपिक एसोसिएशन द्वारा आयोजित 27वें हरियाणा राज्य स्तरीय खेलों में बरोदा रोड स्थित बाल भारती स्कूल की कराटे अकादमी के खिलाड़ियों ने 1 स्वर्ण सहित 6 पदक जीतकर अपनी खेल प्रतिभा का दम दिखाया। शनिवार को स्कूल के निदेशक हरि प्रकाश गौड़ और प्राचार्या सोनू गौड़ ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। हरियाणा खेल कराटे संघ के सह सचिव व जिला सोनीपत कराटे संघ के महासचिव अनिल भारद्वाज के अनुसार 4 से 7 नवंबर तक खरखौदा के प्रताप स्कूल में 27वीं हरियाणा राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन खेलों में कराटे प्रतियोगिता में बाल भारती स्कूल के खिलाड़ी विकास ने स्वर्ण, अरविंद व अनिल ने रजत जबकि तन्नू, तरुण व प्रवीन ने कांस्य पदक हासिल किए।

सोनीपत। विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। *फोटो :हरिभूमि*

गेटवे कॉलेज के बच्चों का अंतर कॉलेज टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन

वीसी ने समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार दिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

गेटवे इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के छात्रों ने दीनबंधु छोटूराम विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल (डीसीआरयूएसटी) द्वारा आयोजित अंतर कॉलेज खेल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए संस्थान का नाम गौरवान्वित किया। फुटबॉल – द्वितीय स्थान , वॉलीबॉल – द्वितीय स्थान , क्रिकेट – द्वितीय स्थान , टेबल टेनिस – द्वितीय स्थान , शतरंज – तृतीय स्थान , कबड्डी – तृतीय स्थान खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन, लगन और टीम भावना की सराहना करते हुए डीसीआरयूएसटी विश्वविद्यालय के कुलपति ने समापन समारोह में विजेता छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए। इस सफलता पर गेटवे एजुकेशन के डायरेक्टर जनरल डॉ. अमिक गर्ग, प्राचार्य डॉ. विनय कुमार सिंघल तथा डीन, छात्र कल्याण विभाग अजय कुमार ने सभी प्रतिभागियों और विजेता टीमों को हार्दिक बधाई दी।

निबंध लेखन में रोहन प्रथम

सोनीपत। टीका राम कन्या महाविद्यालय, सोनीपत के मनोविज्ञान विभाग द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन राष्ट्रीय स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। देशभर के विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम 4 नवंबर 2025 को घोषित किया गया। इसमें बी.टेक एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग के छात्र रोहन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। टीका राम कॉलेज ऑफ एजुकेशन की छात्रा गुनगुन द्वितीय और टीका राम कन्या महाविद्यालय की छात्रा अंतिमा तृतीय स्थान पर रहीं। वहीं, आई.बी.पी.जी. कॉलेज पानीपत की छात्रा प्रन्या, गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ वूमन करनाल की साक्षी, डी.बी.जी. गवर्नमेंट कॉलेज नवांश, गवर्नमेंट कॉलेज बावल और दीप्ती को संयुक्त रूप से सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। कॉलेज की प्राचार्या गीता ने विजेता विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में ऐसे आयोजनों की अहम भूमिका होती है। प्रतियोगिता की संयोजिका श्रीमती कंचन सिंधर और सह-संयोजिका अनु रहीं।

कार्यशाला के जरिए दिया प्रेरक प्रशिक्षण

सर छोटू राम मॉडर्न सीसे स्कूल रतनगढ़ माजरा में आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सीबीएसई सीओई पंचकूला के तत्वावधान में सर छोटू राम मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रतनगढ़ माजरा (सोनीपत) में एक दिवसीय इन-सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का विषय था "लर्निंग आउटकम्स एंड पेडागॉजीज़ (अधिगम परिणाम एवं शिक्षण शास्त्र) जिसे चार घंटे के सीबीएसई प्रशिक्षण समय के रूप में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. मेहर सिंह आर्य के दिशा-निर्देशन में किया गया। सीबीएसई द्वारा नामित रिसोर्स पर्सन डॉ. सीमा मलिक एवं रेनु कथपालिया ने शिक्षकों को नवीन शिक्षण पद्धतियों, अधिगम परिणामों के मूल्यांकन, और शिक्षण में प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग पर प्रेरक प्रशिक्षण दिया।

विद्यालय की मैनेजर बिमला दहिया, चेयरमैन जगदीश लोहचब तथा उप-प्रधानाचार्य अनीता लोहचब ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन शिक्षकों को नई दिशा, ऊर्जा और शिक्षण में निपुणता प्रदान करते हैं। अंत में प्रधानाचार्य डॉ. मेहर सिंह आर्य ने सीबीएसई रिसोर्स पर्सन पंचकूला, प्रशिक्षण विशेषज्ञों एवं सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया।

सोनीपत। शिविर में उपस्थित प्रतिभागियों के साथ रिसोर्स पर्सन एवं अन्य।

नाहरा में 1.30 करोड़ से होंगे विकास कार्य

- विधायक कृष्णा ने दादा कुशाल सिंह दहिया के 350वें बलिदान दिवस का दिया निमंत्रण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राई

विधायक कृष्णा गहलावत ने शनिवार को हलके के गांव नाहरा में 1.30 करोड़ की लागत से होने वाले विकास कार्यों का शिलान्यास किया । गांव में पहुंचने पर विधायक का ग्रामीणों ने फूलमालाओं से स्वागत किया और करोड़ों रुपए के कार्य करने पर विधायक की सराहना की। विधायक कृष्णा ग़हलावत ने महात्मा गांधी ग्रामीण बस्ती में गलियों का निर्माण 19-4लाख, कम्युनिटि सैन्टर के अधूरे पड़े कार्य का निर्माण 19.85 लाख, हनुमान मन्दिर से दादा देती तक की एक गली निर्माण 19.39 लाख, स्टेडियम की चारदीवारी व इसके साथ गली निर्माण 19-15 लाख , डिस्पेन्शरी से लेकर शुभेनदर के मकान तक गली व नाली निर्माण 19.33 लाख, केंद्रीय विद्यालय से लेकर मैन रोड तक नाला निर्माण 19 लाख रुपए की लागत से होने वाले विकास कार्यों का शिलान्यास किया। विधायक कृष्णा ने कहा कि हल्के के सभी गांव में विकास करवाना उनके प्राथमिकता है। गांव में अगर कोई ऐसी समस्या है तो वह उन्हें अवगत करवाए। बड़े से बड़े काम को भी मुख्यमंत्री से स्वीकृत करवा कर पूरा करवाया जाएगा। जनहित के काम बताना ग्रामीणों का काम है और उन्हें पूरा करवाना उनकी जिम्मेदारी है। समस्या बताने पर काम को पूरा करवाना उनकी प्राथमिकता रहेगी।

राई। विधायक कृष्णा गहलावत गांव नाहरा में निमंत्रण देने के दौरान।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर भाजपा नेता सत्यनारायण आंतिल ,जेपी रेवली ,आनंद दहिया चेयरमैन मार्किट कमेटी खरखोदा ,उमेश दहिया सरपंच नाहरा ,मनोज दहिया,अमित दहिया ,राकेश पार्षद ,गोपाल वर्मा ,सुल्तान सिंह ,भगत सिंह, महेंद्र फौजी ,रामचंद्र ,ओमप्रकाश ,रघुवीर हुड्डा, कोच प्रदीप, राहुल ,संतोष देवी, रोजी देवी, अनूप सिंह, भूप सिंह ,मनोज प्रधान, अमित, जय नारायण, प्रेम ,दीपक, प्रदीप पहलवान, राजेश फौजी, अमित राजेंद्र, रमेश ,रामचंद्र ,आवास सिंह, रणबीर ,जगबीर,दलवीर ,अजीत सिंह ,अशोक आदि मौजूद थे।

विधायक ने कार्यक्रम में हरियाणा की वीर भूमि पर जन्मे महाबलीदानी दादा कुशाल सिंह दहिया जी के 350वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आगामी 14 नवंबर को राई स्थित राजीव गांधी विश्वविद्यालय परिसर में भव्य समारोह का निमंत्रण दिया।

वोट चोरी से बनी सरकार लोकतंत्र पर धब्बा इसे एक पल भी सत्ता में रहने का हक नहीं

ग्रामीण जिलाध्यक्ष के बेटे की शादी में पहुंचे थे सांसद दीपेन्द्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सांसद दीपेन्द्र हुड्डा ने आज कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सारे प्रमाणों के साथ देश के सामने स्पष्ट कर दिया है कि हरियाणा में मतदाता सूची में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी कर भाजपा ने चुनाव आयोग की मिलीभगत से मतदाता सूची में धांधलेबाजी की गयी। कहीं फर्जी वोट जोड़कर तो कहीं सही वोट काटकर बीजेपी ने हरियाणा में जनभावना के विपरीत सरकार बनाई। दीपेंद्र हुड्डा शनिवार को सोनीपत में कांग्रेस ग्रामीण जिलाध्यक्ष संजीव दहिया के बेटे की शादी में हिस्सा लेने पहुंचें थे। हरियाणा में 'व्यवस्थाओं और मैनेजमेंट' से बनी सरकार से हम हर स्तर पर लड़ाई लड़ेंगे। हरियाणा में सरकार जनभावना से नहीं, व्यवस्थाओं से मैनेज कर सत्ता पर काबिज हुई है। हरियाणा में वोट चोरी से बनी सरकार लोकतंत्र पर धब्बा है इसे एक पल भी सत्ता में रहने का अधिकार नहीं है। सांसद सतपाल ब्रह्मचारी, सांसद जय प्रकाश जेपी, पार्टी पदाधिकारी आदि मौजूद रहे।

सोनीपत। कार्यक्रम में पहुंचें सांसद दीपेंद्र हुड्डा साथ में सांसद, विधायक एवं अन्य।

आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा भारत : धर्मवीर

भारत संकल्प अभियान के तहत बैठक आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

शनिवार को जिला गोहाना भाजपा की गोहाना में पुराने बस अड्डे पर स्थित ब्रह्म भवन में आत्म निर्भर भारत संकल्प अभियान के तहत बैठक आयोजित हुई। बैठक में पार्टी के प्रबुद्धजनों ने शिरकत की। मुख्यातिथि भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष डॉ. धर्मवीर नांदल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश आत्मनिर्भर की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा है। हमारे देश में 1960 के दशक में गेहूं का आयात होता था। आज हम ज्यादातर खाद्यान्नों पर आत्मनिर्भर के साथ-साथ निर्यात भी कर रहे हैं। सैन्य उपकरणों में भी राष्ट्र आत्म निर्भर होता जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत की अर्थ व्यवस्था विश्व में 11वें पायदान से चौथे नंबर पर पहुंच गई है।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर जिला महामंत्री जितेन्द्र शर्मा, डॉ.ओमप्रकाश शर्मा, डॉ. रमेश कश्यप, भूपेंद्र मुदगिल, जिला मीडिया प्रभारी डॉ. राममेहर राठी, सूरजमल शर्मा, शेरसिंह बेडवाल, जयप्रकाश शर्मा, कमलेश सैनी, कश्मीरी खासा, निशा सांगवान व नरेश देवी आदि उपस्थित रहे।

ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच का धरना

जिला प्रशासन की चुप्पी से कर्मचारियों में रोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सोनीपत में ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच, संबंधित मूलनिवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ और सहयोग बली सेना यूनियन का धरना आज लगातार 38वें दिन भी जारी रहा। वहीं, कर्मचारियों की भूख हड़ताल का आज 8वां दिन हो गया। भूख हड़ताल पर बैठे कर्मचारी मुकेश टांक, सावन कुमार और मुकेश कर्मा की हालत लगातार बिगड़ रही है, लेकिन शासन व प्रशासन की ओर से अब तक कोई समाधान नहीं निकाला गया है।

धरने की अध्यक्षता मंच के प्रधान मुकेश टांक ने की, जबकि संचालन सचिव सावन कुमार ने किया। कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया तो यह भूख हड़ताल 24 घंटे की अमरण अनशन में बदल जाएगी, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी।

सोनीपत। नगर निगम में विरोध प्रदर्शन करते कर्मचारी। *फोटो :हरिभूमि*

ये रहे मौजूद

धरने में उपप्रधान रविंदर, सहसचिव युधिष्ठिर, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मुकेश कर्मा, मीडिया प्रभारी प्रवीण, इंद्रजीत, सुनिता, सुदेश, निशा, राजेश, माया, सुसमा, अंजू और मंजू सहित अनेक कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने एकजुट होकर ठेका प्रथा समाप्त करने, बर्खास्त कर्मचारियों की बहाली और सफाई कर्मचारियों के शोषण पर रोक लगाने की मांग दोहराई।

प्राकृतिक खेती समय की मांग : मलिक

जिला स्तरीय प्राकृतिक खेती मेला आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत शनिवार को कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा सेक्टर-7 स्थित सामुदायिक भवन में जिला स्तरीय प्राकृतिक मेला आयोजित किया गया। मेले में प्राकृतिक उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई और किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। अध्यक्षता जिला सोनीपत के डीडीए डॉ. पवन शर्मा ने की और संयोजन एएसडीओ डॉ. राजेंद्र प्रसाद मेहरा का रहा। मेले के मुख्य अतिथि भाजपा जिला गोहाना के अध्यक्ष बिजेंद्र मलिक और प्रभारी डॉ. किरण कलकल रहे।

गोहाना। प्राकृतिक उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि एवं अधिकारी।

कीटनाशकों के उपयोग से भूमि की सेहत बिगड़ रही

बिजेंद्र मलिक ने कहा कि प्राकृतिक खेती आज समय की मांग है। रासायनिक खेती से उत्पन्न अनाज में वह गुणवत्ता नहीं होती जो प्राकृतिक रूप से उगाए गए अनाज में होती है। प्राकृतिक खेती से कम लागत पर फसलों का अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आज फसलों में अंधाधुंध रासायनिक खादों और कीटनाशकों के उपयोग से भूमि की सेहत भी बिगड़ रही है और बीमारियां भी बढ़ रही हैं। कार्यक्रम में एएई डॉ. नवीन हुड्डा, क्यूसीआई डॉ. राकेश, मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा के पीए सुनील लाकड़ा, भाजपा नेता डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, जिला महासचिव महेंद्र चिड़ाना, अनूप कुंडू, नरेन्द्र गहलावत, बलराम कौशिक, भूपेंद्र मुढ़िल, मुकेश रोहिल्ला, डॉ. राममेहर राठी व प्रदीप बड़वासनी उपस्थित रहे।

आयोजन | 1947 में देश के विभाजन के बाद चुनिंदा स्थानों पर लगता है टुबड़ी मेला

ऐतिहासिक टुबड़ी मेला समारोह को लेकर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे

हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों के दम पर भारत को विश्व पटल पर दिलाएं नई पहचान : अरुण बड़ौक

विश्व स्तर पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाने के लिए हमें अपने सांस्कृतिक उत्सवों को धूमधाम के साथ मनाना चाहिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

भाजपा वरिष्ठ नेता एवं जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य अरुण बड़ौक ने कहा कि सांस्कृतिक समारोह हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों के दम पर अपने भारत को विश्व पटल पर नई पहचान दिला सकते हैं। इसके लिए अपने सांस्कृतिक उत्सवों को धूमधाम से मनाएं। वे ऐतिहासिक टुबड़ी मेला समारोह को लेकर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। वे इस समारोह में अपनी पत्नी सीएम विंडो एमिनेंट पर्सन रमन बड़ौक के साथ बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे थे। अरुण बड़ौक ने कहा कि हमारी संस्कृति हमारी पहचान है। विश्व स्तर पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाने के लिए हमें अपने सांस्कृतिक उत्सवों को धूमधाम के साथ मनाना चाहिए। हम सांस्कृतिक मूल्यों के दम पर एक बार फिर से अपने भारत को उसके खोए हुए विश्व गुरु के सम्मान को वापस दिला सकते हैं। टुबड़ी मेला समारोह में सखी प्रीति एंड पार्टी राजपुरा वाली द्वारा भगवान राधा-कृष्ण व बलराम की रासलीला का आयोजन एवम राधा-कृष्ण संकीर्तन किया गया। विशिष्ट अतिथि भाजपा खानपुर मंडल के अध्यक्ष प्रवीण खुराना थे। सानिध्य बाबा कमलपुरी महाराज का रहा। इस आयोजन में संयोजक पूर्व पार्षद कृष्ण गोपाल चिंदा, विजय कत्याल विनोद निझावन, हनी चिंदा, परीक्षित कत्याल, रमेश मेहता, गुलशन अलावाधी, रजत बड़ौक, लवली वधवा, राजू बधवा, रविन्द्र ढल, प्रदीप निझावन, वेदप्रकाश मेहता व नीरज मेहता सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

चुनिंदा स्थानों पर लगता मेला

1947 में देश के विभाजन के बाद देश में चुनिंदा स्थानों पर यह मेला लगता है। इस मेले में भगवान राधा-कृष्ण व बलराम की रासलीला और संकीर्तन के साथ भारत की संस्कृति से संबंधित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

ठंड ने दी दस्तक, हवा अब भी जहरीली, सांस लेना पड़ रहा भारी

एक्यूआई 251 पर स्थिर, सुबह-शाम धूल और धुएं की परत से घिरा शहर

■ यह आंकड़ा पिछले दिन की तुलना में बिल्कुल समान रहा

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

नवंबर के दूसरे सप्ताह में मौसम का मिजाज बदलने लगा है। सुबह-शाम की ठंड अब महसूस होने लगी है, हवा में सिहरन घुल चुकी है और रातें ठंडी होने लगी हैं। लेकिन राहत की बात यह नहीं कि प्रदूषण का स्तर अब भी घटने का नाम नहीं ले रहा। जिले में शनिवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 251 दर्ज किया गया, जो 'खराब श्रेणी' में आता है। यह आंकड़ा पिछले दिन की तुलना में बिल्कुल समान रहा, यानी हवा की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। सुबह के समय वातावरण में धुंध और धूल का मिश्रण साफ दिखाई देता है। सड़क पर चलने वाले लोगों की आंखों में जलन, गले में खराश और सांस लेने में तकलीफ जैसी शिकायतें लगातार बढ़ रही हैं। ग्रामीण इलाकों से लेकर शहरी क्षेत्रों तक हल्का स्मॉग छाया हुआ है। सूर्य की किरणें भी सुबह देर से धरती तक पहुंच पा रही हैं। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों में लगातार हो रही बर्फबारी का असर अब मैदानी इलाकों में दिखाई देने लगा है। इससे तापमान में लगातार गिरावट दर्ज हो रही है। आने वाले सप्ताह में न्यूनतम तापमान एकल अंकों में यानी 10 डिग्री से नीचे जाने की संभावना है। हालांकि तापमान गिरने से वायु की गति और घनत्व दोनों पर असर पड़ता है, जिससे प्रदूषक तत्व जमीन के करीब अधिक देर तक बने रहते हैं और हवा की गुणवत्ता और खराब हो जाती है।

मौसम बदला, पर राहत नहीं

मौसम विभाग के अनुसार शनिवार को दिन का अधिकतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। एक दिन पहले भी लगभग यही स्थिति रही थी अधिकतम 27.5 और न्यूनतम 11 डिग्री सेल्सियस। दिनभर करीब 8 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से हवा चलती रही, लेकिन इसके बावजूद प्रदूषण का स्तर नीचे नहीं आया।

स्वास्थ्य पर बढ़ता असर

डॉ. योगेश गोयल का कहना है कि इस समय ठंड और प्रदूषण का संयुक्त प्रभाव स्वास्थ्य पर सीधा असर डाल सकता है। उन्होंने सलाह दी कि सुबह और शाम के समय बाहर निकलते समय मास्क का प्रयोग करें, खासकर श्वसन रोगियों, बच्चों और वृद्धजनों को अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ठंडी हवा के साथ सूक्ष्म धूलकण (पीएम 2.5) और धुआं फेफड़ों के लिए बेहद हानिकारक हैं। ऐसे में गर्म कपड़ों के साथ-साथ भाप लेना और पर्याप्त जल सेवन करना जरूरी है।

मौसम शुष्क रहेगा

मौसम शुष्क बना हुआ है। उत्तर से ठंडी हवा मैदानी क्षेत्रों में पहुंच रही हैं, जिसके कारण न्यूनतम तापमान अब कम हो रहा है। अभी दिन में धूप खिली रहेगी। हवा की गति 8-10 किलोमीटर प्रति घंटा बनी हुई है, जिसके कारण प्रदूषण में कमी आ सकती है। कुछ स्थानों पर हल्के बादल छा सकते हैं।
-डॉ. प्रेमदीप सिंह, मौसम विज्ञानी, केवीके सोनीपत।

राहत मिलने के आसार नहीं

सुबह के समय शहर की सड़कों और गलियों में धूल और धुएं की एक परत तैरती दिखती है। निर्माण स्थलों और वाहनों के उत्सर्जन से उठती धूल दिनभर हवा में बनी रहती है। ग्रैप-2 के नियम फिलहाल जिले में लागू हैं, पर प्रभाव सीमित है। नगर परिषद और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा पानी का छिड़काव और सफाई अभियान जारी है, फिर भी हवा में राहत नहीं मिल रही।

एक्यूआई में जमी रही 'खराब' श्रेणी: पिछले कई दिनों से सोनीपत का एक्यूआई 240 से 270 के बीच बना हुआ है। शनिवार को भी यह 251 पर स्थिर रहा। मौसम विभाग का कहना है कि वायु में नमी बढ़ने और हवा की गति धीमी होने से प्रदूषक तत्व ऊपर नहीं उठ पा रहे। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार आने वाले सप्ताह में तापमान में और गिरावट होगी। सुबह के समय कोहरा और प्रदूषण का मिश्रण दृश्यता को प्रभावित कर सकता है। हालांकि उत्तर दिशा से हल्की हवाएं चलने की संभावना है, जो थोड़ी राहत ला सकती हैं, लेकिन फिलहाल सोनीपत की हवा 'खराब' श्रेणी से बाहर आने के आसार बहुत कम हैं।

शहीद दादा कुशल सिंह दहिया के 14 को होने वाले बलिदान दिवस न्योता दिया

■ मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र बड़खालसा और वरिष्ठ भाजपा नेता देवेंद्र कौशिक गांव तेवड़ी में पहुंचे

हरिभूमि न्यूज ⏭ गन्नौर

गांव तेवड़ी में शुक्रवार को मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र बड़खालसा और वरिष्ठ भाजपा नेता देवेंद्र कौशिक ने आगामी 14 नवंबर को राई स्थित राजीव गांधी विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित होने वाले महाबलीदानी दादा कुशाल सिंह दहिया के 350वें बलिदान दिवस समारोह का निमंत्रण दिया। ग्रामीणों ने दोनों का फूलमालाओं से स्वागत किया। मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र बड़खालसा ने कहा कि दादा कुशाल सिंह दहिया जी ने औरंगजेब जैसे अत्याचारी शासक के सामने सिर न झुकाकर अपने प्राणों की आहुति दी थी। उनका बलिदान न केवल हरियाणा बल्कि पूरे देश के गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि ऐसे वीर सपूतों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रप्रेम, साहस और बलिदान का संदेश देते हैं। उन्होंने ग्रामवासियों से अपील की कि वे 14 नवंबर को परिवार सहित राजीव गांधी विश्वविद्यालय में पहुंचे और कार्यक्रम में शामिल हो।

गन्नौर। मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र बड़खालसा और वरिष्ठ भाजपा नेता देवेंद्र कौशिक निमंत्रण देते हुए

ये रहे मौजूद

इस मौके पर मार्केट कमेटी चेयरमैन निशांत छोकर, मंडल अध्यक्ष सरवन कौशिक, गौरव कामरा, अजय जैन, संजय गौतम, दीपक नैण, ग्राम सरपंच रविंद्र (गुमड़), जिला परिषद सदस्य कविता शर्मा, सोम दत्त सरपंच पुगथला व अन्य मौजूद रहे।

शिक्षकों के लिए विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ राई

ओम शांति शिक्षा सदन विद्यालय, नाथूपुर (सोनीपत) में शिक्षकों के लिए विज्ञान विषय पर एक प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक और प्रायोगिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य राजेश कुमार गुप्ता ने विधिवत दीप प्रज्वलन के साथ किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य राजेश कुमार गुप्ता ने रिसोर्स पर्सन रीतू सिंह व पूजा जिंदल का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। प्रधानाचार्य राजेश ने संबोधित करते हुए कहा कि ऐसे प्रशिक्षण शिक्षकों को नई शिक्षण तकनीकों से जोड़ते हैं, जिससे विद्यार्थी विज्ञान को अधिक रोचक और समझने योग्य बना पाते हैं। कार्यशाला के दौरान शिक्षकों को नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण, जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञान और तकनीकी नवाचारों विशेष रूप से रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विषयों पर जानकारी दी गई।

राई। प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक और प्रायोगिक कार्यशाला के प्रतिभागी शिक्षक रिसोर्स पर्सन के साथ। फोटो : हरिभूमि

गन्नौर। स्कूल की छात्रा दीक्षा पदक जीतने के बाद आयोजकों के साथ।

विद्यालय की निदेशक अनीता कुमारी और प्रधानाचार्या मनीषा ने दी छात्रा दीक्षा को बधाई

समाज कल्याण स्कूल की दीक्षा ने प्रतियोगिता में जीता स्वर्ण पदक

हरिभूमि न्यूज ⏭ गन्नौर

समाज कल्याण सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बजाना कलां की छात्राओं ने विद्यालय और क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। विद्यालय की कक्षा चौथी की छात्रा दीक्षा गांव पुगथला में 8 नवंबर को राजीव गांधी खेल स्टेडियम, रोहतक में आयोजित हरियाणा राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में 200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दीक्षा की उत्कृष्ट उपलब्धि ने न केवल विद्यालय परिवार, बल्कि पूरे क्षेत्र को गर्व से भर दिया है। उसकी मेहनत, अनुशासन और दृढ़ संकल्प ने यह सिद्ध कर दिया कि समर्पण और निरंतर अभ्यास से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालय परिसर में इस उपलब्धि का जश्न मनाया। छात्र-छात्राएं दीक्षा की सफलता से प्रेरित होकर आगामी खेल आयोजनों में भाग लेने के लिए उत्साहित दिखाई दिए। विद्यालय की निदेशक अनीता कुमारी और प्रधानाचार्या मनीषा ने सभी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, जो शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना को भी विकसित करते हैं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। विद्यालय प्रबंधन ने दीक्षा को इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बच्चों के करियर निर्माण में अभिभावकों की अहम भूमिक

राई। करियर काउंसलिंग कार्यक्रम में करियर काउंसलर सुश्री नोविता चोपड़ा संबोधित करते हुए । फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ राई

■ जी. डी. गोयंका इंटरनेशनल स्कूल, सोनीपत में करियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन

खेवड़ा स्थित जीडी गोयंका इंटरनेशनल स्कूल, सोनीपत में विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए करियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के अध्यक्ष योगेश जिंदल और उपप्रधानाचार्या निधि जैन ने दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर कक्षा नौवीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के अभिभावकों को आमंत्रित किया गया ताकि वे अपने बच्चों के करियर विकल्पों और उनके सही मार्गदर्शन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें। कार्यक्रम में करियर काउंसलर नोविता चोपड़ा ने विद्यार्थियों और अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि "माता-पिता अपने बच्चों के करियर निर्माण में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं, इसलिए उन्हें अपने बच्चों की रुचियों और क्षमताओं को समझना चाहिए। उन्होंने करियर काउंसलिंग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को अपनी रुचियों, कौशलों और मूल्यों के आधार पर उचित करियर दिशा चुनने में सहायता करती है।

गोहाना। समारोह में मंच पर आसीन अतिथि एवं खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

खेलों से जीवन में आता है अनुशासन : मनजीत

हरिभूमि न्यूज ⏭ गोहाना

■ चौ. प्रीत सिंह लाठर शिक्षा समिति द्वारा लक्ष्मी मॉर्डन स्कूल बिचपड़ी में खेलों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम

शैक्षणिक खंड मुंडलाना के अंतर्गत गांव बिचपड़ी स्थित लक्ष्मी मॉर्डन स्पोर्ट्स स्कूल में खेलों में कॅरियर निर्माण को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम चौ. प्रीत सिंह लाठर शिक्षा समिति द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा मुंडलाना मंडल के अध्यक्ष इंद्रपाल ने शिरकत की। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य वक्ता समिति के अध्यक्ष एवं स्कूल के एमडी मंजीत लाठर ने कहा कि युवा पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भाग लेकर अपने कॅरियर का निर्माण करें। खेलों से शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक विकास को तो बढ़ावा मिलता ही है साथ में जीवन में अनुशासन की भावना का विकास भी होता है। खेलों में प्रगति किसी भी देश की साख बढ़ाती है। ऐसे में युवा खेलों में कॅरियर निर्माण करके अपने, अपने गांव व राष्ट्र के विकास में सहभागी बन सकते हैं। समारोह की अध्यक्षता प्राचार्या पूनम लाठर ने की। इस अवसर पर शिक्षक मनीषा, बिजेंद्र सिंह विकास सहित अन्य स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बच्चों ने ग्रेंड पेरेंट्स सम्मान स्वरूप 'आशीर्वाद' समारोह में दिखाई भावनाएं

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

■ विद्यार्थियों ने मनमोहक स्वागत गीत, गणेश वंदना, भावनात्मक नृत्य और संदेशपरक नाटक प्रस्तुत किए

गेटवे इंटरनेशनल स्कूल की प्री-प्राइमरी शाखा द्वारा "ग्रैंड पेरेंट्स डे" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में अपने दादा-दादी, नाना-नानी के प्रति सम्मान, प्रेम और जुड़ाव की भावना को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. संतोष राठी एवं विक्रम राठी, संरक्षक अंजू मंगला, विद्यालय के प्राचार्य प्रेम कुमार ओझा और उप-प्राचार्या रिम्पी वर्मा उपस्थित रहीं। दीप प्रज्वलन और मातृ-पितृ वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। पर्ल से डायमंड ग्रेड तक के नन्हें विद्यार्थियों ने मनमोहक स्वागत गीत, गणेश वंदना, भावनात्मक नृत्य और संदेशपरक नाटिका प्रस्तुत कर सबका मन जीत लिया। बच्चों ने यह संदेश दिया कि दादा-दादी और नाना- नानी जीवन के सच्चे मार्गदर्शक हैं। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथियों और ग्रैंड पेरेंट्स को सम्मान स्वरूप स्मृति चिह्न भेंट किए गए।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

ओम पब्लिक स्कूल में अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में 19 टीमों ने लिया भाग

ओम स्कूल की एकता ने जीता श्रेष्ठ वक्ता का खिताब

गोहाना। विजेताओं को ट्राफी प्रदान करते हुए अतिथि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में झूमते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ गोहाना

गोहाना-जींद मार्ग स्थित ओम पब्लिक स्कूल में शनिवार को अंतर विद्यालय अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों की 19 टीमों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि एसीपी देवेंद्र सिंह थे। अध्यक्षता मेजबान स्कूल के प्राचार्य डॉ. सचिन शर्मा ने की। मंच संचालन उप प्राचार्या रेखा बजाज ने किया।

अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में गोहाना-पानीपत मार्ग स्थित दून पब्लिक स्कूल की टीम प्रथम स्थान पर रही। विजेता टीम विजेता और एकता पर आधारित रही। टीम को ट्राफी एवं 51 सौ रुपये नकद पुरस्कार दिया गया। दूसरे स्थान पर गांव खानपुर कलां स्थित ग्लोबल पब्लिक स्कूल की टीम रही और तीसरा स्थान मेजबान ओम पब्लिक स्कूल की टीम ने प्राप्त किया। इन टीमों को क्रमशः 31 सौ और 21सौ रुपये नकद पुरस्कार दिया गया। ओम पब्लिक स्कूल की छात्रा एकता ने श्रेष्ठ वक्ता का खिताब जीता।

पुरातन संस्कृति की दिखाई झलक

समारोह सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सराबोर रहा। इस समारोह में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी कला प्रतिभा की शानदार झलक दिखाई। विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

अरुणोदय के साथ मनाया गया वार्षिकोत्सव

ऋषिकुल विद्यापीठ गोहाना रोड में वार्षिकोत्सव 'अरुणोदय : संघर्ष से समरसता की ओर' बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। बच्चों ने 'आत्मनिर्भर भारत ' प्रदर्शनी के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया। वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि विद्यालय के फाउंडर पैटर्न एसके शर्मा रहे। विद्यालय अध्यक्ष नीरज शर्मा, रीमा शर्मा, चंचल शर्मा व अंजु चौहान ने विशेष अतिथियों का पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। विद्यालय अध्यक्ष नीरज शर्मा ने विद्यालय की प्रगति, गतिविधियों एवं भविष्य की योजनाओं से संक्षिप्त रूप से अवगत करवाया।

मुख्यमंत्री के नाम चार सूत्री ज्ञापन सौंपा

दोषियों की गिरफ्तारी की मांग

सोनीपत। विरोध प्रदर्शन करते हुए विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में महिला सफाई कर्मचारियों के साथ अमानवीय व्यवहार के विरोध में सीटू का प्रदर्शन

सोनीपत। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में महिला सफाई कर्मचारियों के साथ सफाई सुपरवाइजर द्वारा किए गए अमानवीय व्यवहार के विरोध में आज सेंट्रल ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) जिला कमेटी सोनीपत ने उपायुक्त कार्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने डीसी के माध्यम से मुख्यमंत्री हरियाणा के नाम चार सूत्री ज्ञापन भेजा। इसमें मांग की गई कि दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए, सभी कार्य स्थलों पर उत्पीड़न रोकथाम कानून का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए, महिलाओं के खिलाफ हिंसा रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं तथा न्यायमूर्ति वर्मा आयोग की सिफारिशों को लागू किया जाए। घटना के अनुसार, कुछ महिला सफाई कर्मचारियों ने मासिक धर्म के कारण कुछ रियायत मांगी थी। इस पर सुपरवाइजर ने अधिकारियों से शिकायत कर दी, जिसके बाद जांच के नाम पर महिलाओं की निजी जांच की गई। एक महिला कर्मचारी के अंतःवस्त्र तक की जांच की गई और सैनिटरी पैड की फोटो तक ली गई। यह बेहद शर्मनाक व अमानवीय घटना बताई जा रही है। पुलिस ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर एससी/एसटी एक्ट की धाराएं भी जोड़ी हैं, लेकिन अब तक किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है, जिससे महिला कर्मचारियों में गहरा आक्रोश है। प्रदर्शन में जनवादी महिला समिति की कोषाध्यक्ष अनीता चिताना, सीटू की जिला प्रधान अनीता ककरोई व अन्य मौजूद रहे।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक रविवार 9 नवंबर 2025

हम सब जानते हैं कि देश-समाज का भविष्य हमारे नौनिहालों के हाथों में है। इसलिए उनके लालन-पालन से लेकर उनके समग्र विकास पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। नए दौर में बच्चों के सामने कैसी चुनौतियां हैं, उन्हें किन स्तरों पर संघर्ष करना पड़ रहा है, इसे हमें समझना होगा। तभी उनका बचपन सुरक्षित होगा और उनके साथ देश-समाज का भविष्य भी बेहतर बन सकेगा।

हमारी सजगता से बच्चों को मिलेगा
सुरक्षित बचपन-बेहतर भविष्य

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

हर साल 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर भारत में बाल दिवस मनाया जाता है, जिसका पारंपरिक अर्थ रहा है- बच्चों की मासूमियत और जिज्ञासा को सहेजना। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जब से बाल दिवस शुरू हुआ था, तब से अब तक इसके भावनात्मक अर्थ पूरी तरह से बदल चुके हैं। कभी यह बच्चों को टॉफी देने, उनसे कार्यक्रम करवाने और स्टेज से उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने का दिन हुआ करता था। लेकिन 21वीं सदी के इस 25वें साल में बाल दिवस का मतलब हर बच्चे को डिजिटल, मानसिक और पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित बचपन देना है।

बदल गए बाल दिवस के मायने

आज बच्चों से मुखातिब होने का मतलब उन्हें केवल शिक्षा और पोषण तक सीमित रखना नहीं है बल्कि आज के बच्चों का एक्सपोजर- एआई, सोशल मीडिया, मोबाइल एडिक्शन, जलवायु संकट और करियर को लेकर तरह-तरह के दबावों से घिरा हुआ है। आज बचपन के चारों तरफ नई-नई चुनौतियां हैं, जिन्हें शायद आज के चार दशक पहले के बच्चे जानते तक नहीं थे। इसलिए साल 2025 में बाल दिवस का वही मतलब नहीं है, जो 1970 या 80 में हुआ करता था। आज बाल दिवस का मतलब बच्चों को सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल इंसान बनाने का सपना ही नहीं बल्कि उन्हें उचित अवसर देना भी है। इसलिए आज यह दिन बच्चों को याद करने का नहीं, उनकी दुनिया को बेहतर बनाने का दिन है। आज यह दिन हममें उनके भविष्य के निर्माण के प्रति चिंता पैदा करता है। नई सदी की नई चुनौतियों के अनुरूप आज बच्चों के बचपन को संजोने से आगे बढ़कर उन्हें भविष्य के अनुरूप इंसान गढ़ने का दिन है।

कई दबावों से घिरा है बचपन

पंडित नेहरू बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। उनका सोचना था कि अगर बच्चों को सही दिशा में सोचने, सवाल करने और सीखने की आजादी मिले तो वे आपकी कल्पना से भी ऊंची उड़ान भर सकते हैं। लेकिन हमने आजादी के बाद के पिछले 80 सालों में बचपन को फलने-फूलने के लिए एक खुला वातावरण देने की बजाय आज के बच्चों को प्रेशर कुकर पीढ़ी बना दिया। आज दस साल का बच्चा भी अपने करियर की उस तरह चिंता करता है, जैसी चिंता आजादी के तुरंत बाद के दिनों में 40 साल के अधेड़ भी नहीं करते थे। उस जमाने में बचपन का मतलब होता था- खेलना, बेफिक्र होकर जीना और जीवन की असफलताओं से गुजरकर सफलता की ओर बढ़ना। लेकिन आज स्थिति एकदम बदल गई है। ऐसा माहौल बन गया है जैसे आज जीवन में असफलता के लिए कोई जगह ही नहीं है। आज की तारीख में दस-बारह साल के बच्चे एक नहीं कई-कई क्षेत्रों में पारंगत बनने के लिए वैसी गंभीर ट्रेनिंग लेते हुए मिल जाएंगे, जैसे कभी वयस्क लिया करते थे।

बच्चों के बीच न पनपे असमानता

डिजिटल युग में बचपन की बाधाएं बिल्कुल अलग हैं। आज 27 करोड़ बच्चे इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। अब किताबों से पहले उनके हाथ में स्मार्ट मोबाइल होते हैं, जबकि दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे हैं, जिन्हें जीवन की बुनियादी सुविधाएं भी हासिल नहीं हैं। ऐसे में भला देश के सभी बच्चे एक तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यहां स्मार्ट फोन रखने वाले बच्चे ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजाइन और उद्यमिता के भविष्य का पाठ अपनी स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही पढ़ना शुरू कर देते हैं, वहीं करोड़ों गांवों, कस्बों के बच्चों के लिए ये पाठ उनकी जिंदगी शुरू हो जाने के बाद भी मुश्किल से शुरू हो पाता है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी तरह से व्यवस्था करके भारत में बच्चों के बीच असमानता की इस बड़ी खाई को पाटना होगा। आज बड़े पैमाने पर नई पीढ़ी को यह समझाने की जरूरत है कि अब डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी नहीं बल्कि उस मोड़ पर आ गई है, जहां इसे नैतिक शिक्षा का भी हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों को आज यह बताना जरूरी है कि डिजिटल माध्यम उनके अच्छे भविष्य को संवारने का साधन मात्र है, साध्य नहीं।

भविष्य के लिए करना होगा तैयार

आज बाल दिवस के मौके पर हम बच्चों को कोई चीज समझाने के लिए रटाने की जिद नहीं कर सकते बल्कि उन्हें समस्या का हल निकालने का मैथड समझाना होगा, साथ ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी उनमें भरनी होगी, ताकि वह भविष्य में सिर्फ रोजगार के क्षेत्र में ही सफल न हों बल्कि जीवन जीने के मामले में भी बेहद कामयाब हो सकें। आज बच्चों में पर्यावरणीय चेतना जगाना एक्स्ट्रा एक्टिविटी नहीं, न उनको विशेष बनाना है बल्कि यह जीने की जरूरी गतिविधि का हिस्सा है।

इसी तरह बच्चों में समानता और समावेशिता की सीख देना सिर्फ उन्हें बेहतर इंसान बनाने की कोशिश नहीं है बल्कि उन्हें आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में योग्य बने रहने का जरूरी गुण है और याद रखिए, आज के बच्चों को न तो पूरी तरह से घर की जिम्मेदारी पर छोड़ा जा सकता है और न ही मां-बाप उन्हें बेहतर इंसान और सफल नागरिक बनाने की सारी जिम्मेदारी स्कूलों पर डाल सकते हैं। यह स्कूलों और घरों के साझे अभियान का समय है। अगर हम बच्चों को भविष्य का सफल और शिष्ट नागरिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। तभी बाल दिवस मनाना भी सफल होगा। *

बच्चों के तनाव को करें दूर

साल 2024 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक आज हर सात में से एक बच्चा किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से गुजर रहा है। मोबाइल युग के पहले ऐसा खतरा दूर-दूर तक नहीं होता था। आज बच्चों के सामने परीक्षा का डर, सोशल मीडिया की चिंता और माता-पिता की उम्मीदों की धुकधुकी उन्हें सहज नहीं होने देती। अगर हम बच्चों को भविष्य का स्वस्थ और सफल इंसान बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके स्वास्थ्य को लेकर सहानुभूति से सुनने की सोच बदलनी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग सेल, ओपन टॉक सेशन और इमोशनल लिट्रेसी प्रोग्राम लागू करने की बेहद जरूरत आन पड़ी है। आज बाल दिवस बड़ी शिद्दत से हमें याद दिलाता है कि बच्चों में भावनात्मक मजबूती, उनके सफल होने की बुनियादी शर्त है। साथ ही आज बदलते युग की जरूरतों में किसी न किसी कुशलता में दक्ष होना और अपनी गतिविधियों में वैल्यू एडिशन करने की क्षमता पाना भी जरूरी है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि साल 2030 के बाद मशीनें सिर्फ मशीनें नहीं रहेंगी, वह इंसान से भौतिक प्रतिस्पर्धा करती नजर आएंगी। आने वाले दिनों में परंपरागत नौकरियां बदल जाएंगी। इसलिए आज की पीढ़ी को सीखना ही नहीं बहुत सतर्कता और सावधानी से अपनी क्रिएटिविटी और कोलेबरेशन की क्षमता को भी साथ-साथ बढ़ाना है।

विशेष: बाल दिवस
14 नवंबर

दायित्व
डॉ.अनिता राठौर

पैरेंट्स-टीचर्स जरूर समझें
बच्चों की जरूरतें-समस्याएं

हर साल मनाए जाने वाले बाल दिवस का आशय हमें इस बात का एहसास भी कराना है कि कैसे आने वाले समय में बच्चे अपनी कल्पना, मासूमियत और संवेदनशीलता को बरकरार रखते हुए आगे बढ़ सकें? लेकिन सवाल है क्या आज अभिभावक और अध्यापक सचमुच बच्चों के रोजमर्रा की जरूरतों को समझते हैं? क्या तकनीक के बदलाव के इस दौर के बच्चों की जुबान और उनके मन पर तेजी से पड़ रहे प्रभावों को वो समय के अनुरूप समझ पा रहे हैं और इसको ध्यान में रखते हुए उनके विकास की जरूरत की भाषा बोल-समझ पा रहे हैं?

बदलें अपनी मानसिकता: जिस तरह से इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्ट क्लास, डिजिटल गेम्स और जूम्स गैदरिंग ने आज की समूची जीवनशैली को बदलकर रख दिया है, उस जीवनशैली को आज की एक दशक पुरानी भाषा से न तो समझा जा सकता है और न ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन सवाल है, क्या आज भी कई दशक पुराने अध्यापक जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की बागडोर अपने हाथों से संभाले हुए हैं, उन्हें डिजिटल युग के इन बच्चों की अभिव्यक्ति की भाषा समझ में आती है? क्या वे उन्हें उनके अनुरूप भाषा में जवाब दे पा रहे हैं? यह सिर्फ अध्यापकों के समक्ष का सवाल नहीं है। सच तो यह है कि यह बात अभिभावकों पर भी पूरी तरह से लागू होती है। आज के बच्चों का बचपन सिर्फ खेल के मैदान में नहीं बल्कि खेल के मैदान में कम, स्क्रीन की रोशनी के बीच ज्यादा बीतता है। लेकिन उनके अधिकांश अभिभावक साथ ही अध्यापक भी आज भी 90 के दशक की उस मानसिकता में अटके हुए हैं, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे किताबों में डूबे रहें, अपनी क्लास में सबसे ज्यादा नंबर लाएं, बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानें और घर में जब रिश्तेदार आएं तो उनके सामने वे अपने मां-बाप और रिश्तेदारों द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब गर्दन नीची करके दें।

बदल गई बच्चों की मनःस्थिति: आज के बच्चों की मनःस्थिति बिल्कुल बदल गई है। सच तो यह है कि आज के तेज रफ्तार विकास और चमत्कारिक हो चली तकनीकी के इस युग में उनके मनो-मस्तिष्क में जिज्ञासाओं और आशंकाओं की तेज रफ्तार के अंधड़ चल रहे हैं। फिर भी अभिभावक हों या अध्यापक, उनसे 90 के दशक के बच्चों की तरह ही अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करते हैं। मां-बाप और स्कूल टीचर बच्चों को आज भी पुराने खांचे और सांचे में ढाले रखना चाहते हैं। आज के मां-बाप और अध्यापक इस बात को समझ ही नहीं रहे कि तेजी से आ धमके डिजिटल युग ने किशोरों की समूची मानसिक संरचना को बदल कर रख दिया है। आज 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है।

आज के बच्चे 'डिजिटल नेटिव्स' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डांटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए।

समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतें: एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी का मोबाइल होना चाहिए, वो प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर या ट्यूटर से कोचिंग पढ़ें और उनके कपड़े अच्छे से प्रेस (इस्त्री) होने चाहिए। मां-बाप भूल जाते हैं कि बच्चों की इन सब चीजों के अलावा भी जरूरतें हैं। उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतें। लेकिन यह सिर्फ मां-बाप की ही कहानी नहीं है, आज के अध्यापक भी भूल जाते हैं कि उनके छात्र, उनसे टेक्नोलॉजी में कुशलता के अलावा जीवन की कठिन गांठों को सुलझाने की उम्मीद भी रखते हैं। आज के किशोरों के दिल की बात सुनने वाला कोई नहीं है, न स्कूल में अध्यापक, न घर में मां-बाप।

जी लेने दें बच्चों को बचपन: आज अभिभावकों और अध्यापकों को ठहरकर इन बातों पर गौर करना चाहिए। ऐसे संक्रमण काल में यह जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक दोनों ही बच्चों के दिल की आवाज को गंभीरता से सुनें। आज भी बच्चों को उनकी रुचियों के मुताबिक जीने और बचपने का आनंद लेने की छूट दी जानी चाहिए, जिसके लिए जरूरी है कि अभिभावक और अध्यापक दोनों ही आज के बचपने की भाषा को गंभीरता से समझें, तभी इस सब कुछ की संभावना वाले युग में बच्चों का बचपन शानदार और खुशियों से भरा होगा। *

गजल
प्रताप सोमवंशी

वो सारा दर्द छुप जाता था जो घर-बार के अंदर
वही दिखने लगा है आज-कल अखबार के अंदर

वो घर के एक बूढ़े की तरह सबसे निभाता है
मुसीबत छह दिनों की छुप गई इतवार के अंदर

ये रिश्ते तौलना, गिनना, उठाना, देखना, रखना
ये हम परिवार के अंदर हैं या बाजार के अंदर

वहां रिश्तों की खिड़की पर है कितने कीमती पर्दे
घुटन महसूस होती है मुझे दीवार के अंदर

किसी को भी कभी शीशे के जैसे मत समझ लेना
बहुत चुभता है जब टूटा है कुछ किरदार के अंदर

भलाई सिर्फ इतना चाहती है सौंपकर सबकुछ
बदल जाए कहीं दुनिया में कुछ दो-चार के अंदर

बहुत मजबूत होते हैं ये मजबूरी के कांधे भी
जो पूरा गांव ढो कर रख गए बाजार के अंदर

व्यंग्य / विनय मोघे

मोबाइल का बवाल

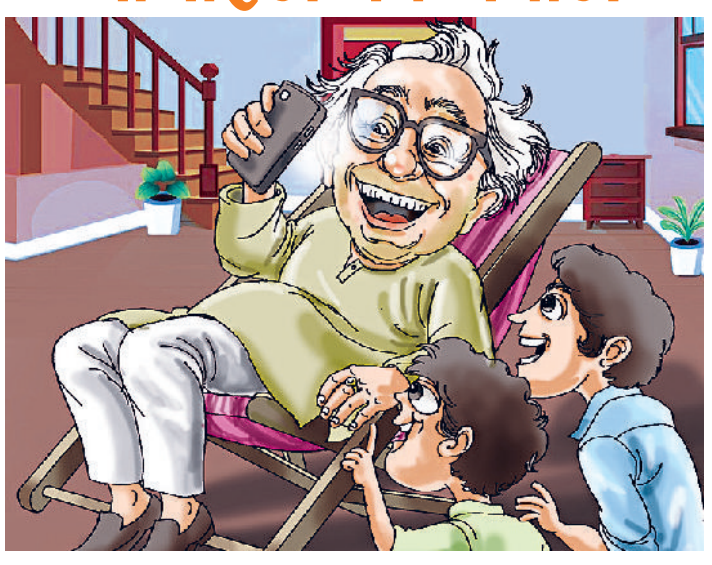

सत्तर वर्षीय ख्यालीराम का परिवार चिंतित है, क्योंकि ख्यालीराम ने अन्न-जल त्याग देने की घोषणा कर दी है। कारण यह है कि घरवालों ने उनका मोबाइल उनसे ले लिया है। अब उनका फेसबुक, व्हाट्सएप सब बंद है। दुनिया से उनका संपर्क टूट गया है, इसीलिए उन्होंने अन्न-जल से अपना, संपर्क तोड़ लेने की ठान ली है।

दरअसल, कुछ महीने पहले ही उनके बेटे ने उनके जन्मदिन पर उन्हें अच्छा वाला स्मार्टफोन दिलाया था। उनके पौत्रों ने उनके मोबाइल पर कई सारे एप्स डाउनलोड कर दिए थे। ख्यालीराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कांपते हाथों और कमजोर नजरों से ख्यालीराम उन एप्स का उपयोग करने लगे। बस यहीं से उनकी और उनके परिवार की परेशानी का सिलसिला शुरू हो गया।

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो उनके कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। साथ ही में RIP की जगह दो बार PIP-PIP भी लिख दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप नहीं कर पाते तो कॉपी पेस्ट कर दिया करते। ऐसे में कभी एनिवर्सरी के उनके संदेश में अकसर पति-पत्नी की जोड़ी बदल जाती थी। पतियों को शायद उनका ऐसा करना अच्छा लगता हो पर पत्नियां नाराज हो उठती थीं। उनकी गलतियों से बचने के लिए उनके दोनों पौत्रों ने उन्हें वॉइस मैसेज भेजने का आइडिया सुझाया। एक बर्थ-डे पर उन्होंने जो वॉइस मैसेज भेजा, जिसमें सिर्फ उनके खांसने की आवाज और दो बार 'हे राम, ये खांसी तो मार ही डालेगी मुझे।' सुनाई दिया। पूरे मैसेज में बर्थ-डे का जिक्र कहीं नहीं हुआ।

फेसबुक पर अपने पुराने मित्रों, सहेलियों को ढूंढने के चक्कर में उनके नाम से मिलते-जुलते नाम वाले कई लोगों को अपना मित्र बना लिया था। कुछ ही दिनों में उनके मित्रों की कुल संख्या सैकड़ा पार कर गई थी, जिनमें असली मित्र बहुत ही कम थे। कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण उनके फेसबुक मित्रों की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही थी। एक दिन किसी ऑनलाइन शॉपिंग एप पर उनके कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण 43 इंच एलईडी टीवी ऑर्डर हो गया, वो भी 'कैश ऑन डिलीवरी।' जिस दिन यह घटना हुई, उसी दिन घरवालों ने उनसे मोबाइल वापस ले लिया। मोबाइल के आदी हो चुके ख्यालीराम अब अन्न-जल के बिना रह सकते हैं पर मोबाइल के बिना नहीं। घरवाले सोच रहे हैं, उन्हें अन्न-जल दें या मोबाइल? *

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो ख्यालीराम के कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए।

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

जीने का रास्ता दिखाती कहानियां

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है। इस बदलाव की सबसे बड़ी मार परिवार, रिश्ते, नाते और हमारी संवेदनाओं पर पड़ी है। हर किसी की जिंदगी में हर दिन कुछ ना कुछ टूट रहा है, बिखर रहा है। तकनीक की तरक्की ने दूरियों को और बढ़ाने का काम किया है। इन्हीं दूरियों, बिखराव और भटकाव के बीच जीने का रास्ता तलाशती हैं 'पा की डायरी' की कहानियां। इस पुस्तक की लेखिका आशा शर्मा हैं। लेखिका अपनी इन कहानियों में एक स्वप्न बुनती हैं। स्वप्न जिसमें परिवार का साथ, रिश्तों में नमी व स्त्री की स्वतंत्रता हो। शीर्षक कहानी 'पा की डायरी' दांपत्य प्रेम की अनूठी बानगी है। एक डायरी जो जीवन भर पत्नी को परेशान करती रही। पति के मृत्यु के बाद उसका रहस्य खुलता है, जो पत्नी को हैरान कर देता है। 'दिमाग वाली लड़की' आज की आत्मचेता स्त्री के स्वाभिमान की कहानी है। 'अधबुना स्वेटर' में लेखिका ने रिश्तों की गर्माहट की बड़ी आत्मीय कहानी लिखी है। 'प्रतिरूप', 'पिघलती बर्फ', 'जी ले जरा' आदि कहानियां भी जीवन के उतार-चढ़ाव को खूबसूरती से उकेरती हैं। कह सकते हैं कि ये आज के जटिल समय की कहानियां हैं। मगर लेखिका ने इसे बड़े सरल तरीके से लिखा है। बिल्कुल सुलझे अंदाज में। *

पुस्तक: पा की डायरी (कहानी संग्रह),
लेखिका: आशा शर्मा, **मूल्य:** 260 रुपए,
प्रकाशक: समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली

एआई इमेज

लघुकथा / बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

बड़ा आदमी

सुभाष के बारह वर्षीय बेटे राहुल ने मचलते हुए कहा, 'पापा, मुझे बड़ा आदमी बनना है।'

'इस सीढ़ी पर चढ़कर बैठ जा।' सुभाष ने दीपावली की सफाई के लिए निकाली गई सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए मजाकिया ढंग से कहा।

राहुल भी हंसी-हंसी में सीढ़ी के तीन डंडों पर चढ़कर ऊपर बैठ गया।

पिता ने पहले अपने और फिर उसके सिर पर हाथ ले जाते हुए बताया, 'देखो, अब तुम मुझसे भी बड़े हो गए। ध्यान दो, तुम एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए बड़े बने हो।'

राहुल ने शिकायती लहजे में कहा, 'ऐसे नहीं, मुझे सचमुच का बड़ा आदमी बनना है।'

'इसके लिए तुम्हें अपने ही आस-पास के किसी बड़े आदमी को ढूंढना होगा, उसके समीप रहना होगा और फिर उसके जैसा बनने की कोशिश भी करनी होगी।'

राहुल ने सवाल किया, 'लेकिन कोई बड़ा आदमी है, मैं कैसे पहचानूंगा?'

'हां, यह समस्या तो है। पहले के समय में पहचान का तरीका अलग था। कोई सज्जन होता था, ज्ञानी होता था, समाज के हित के लिए काम करता था तो उसे बड़ा आदमी माना जाता था। आज के जमाने में किसी व्यक्ति के आस-पास के लोगों को व्यवहार देखकर यह जाना जाता है।' सुभाष ने बताया।

'उस व्यक्ति के बजाय उसके आस-पास के लोगों का व्यवहार देखकर पहचाना जाएगा कि वह कितना बड़ा आदमी है?' राहुल ने आश्चर्य से पूछा।

'हां!' पिता सुभाष ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'कोई आदमी कहीं पहुंचे तो उसे आता देखकर वहां बैठे सारे लोग खड़े हो जाएं, वह आकर बैठ जाए तो सभी बैठ जाएं, वह आदमी चलने के लिए उठकर खड़ा हो तो शेष लोग भी खड़े हो जाएं, उसे छोड़ने बाहर तक जाएं, तब समझो कि वह बड़ा आदमी है।' *

सेलिब्रेशन / शिखर चंद जैन

अपने भारत देश में तो बाल दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को बाल दिवस मनाता है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों में अलग-अलग महीनों/दिनों में बाल दिवस अनोखे अंदाज में मनाया जाता है। इनमें से कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस, जानिए।

दुनिया भर में मनाते हैं बाल दिवस

बच्चों को पूरी दुनिया में प्यार किया जाता है। यही वजह है कि दूसरे दिवस भले ही दुनिया में हर जगह न मनाए जाते हों लेकिन चिल्ड्रेंस-डे दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि साल के हर महीने में कहीं ना कहीं चिल्ड्रेन-डे मनाया जाता है। दुनिया भर में 90 से ज्यादा देशों में बच्चों के सम्मान में एक समर्पित राष्ट्रीय अवकाश है। इस अवकाश को बाल दिवस के नाम से जाना जाता है। आइए जानते हैं, दुनिया के कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस-

कोडोमो नो हि जापान

जापान में, बाल दिवस हर वर्ष 5 मई को मनाया जाता है। सन 1948 से यह राष्ट्रीय अवकाश है। इसे दो त्योहारों के रूप में मनाया जाता था, टैंगो नो सेक्कु (लड़कों का दिन) और हिनामात्सुरी (लड़कियों का दिन)। जापान में बाल दिवस मनाने का सबसे प्रसिद्ध तरीका काबूतो और गोगात्सु-निंग्यो जैसे पारंपरिक आभूषणों को प्रदर्शित करना होता है। काबूतो एक पारंपरिक समुराई हेलमेट है, जो अकसर सबसे सुंदर सजावट के साथ होता है। गोगात्सु-निंग्यो कवच और जापानी तलवार से सुसज्जित जापानी योद्धा गुड़िया का प्रतीक है। लोग उन्हें घर पर प्रदर्शित करते हैं। 'कोडोमो नो हि' यानी बाल दिवस जापान में एक राष्ट्रीय अवकाश है। कोइनोबोरी नामक रंगीन झंडे उत्सव के विशेष प्रतीक हैं, जिन्हें इस दिन घरों के बाहर खंभों पर लटकाए जाते हैं। जापानी में, कोइ का मतलब कार्प होता है। यह एक प्रकार की मछली है, जो शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है और नोबोरी का मतलब है ऊपर उठना। बाल दिवस के अवसर पर टोक्यो के राष्ट्रीय कासुमीगाओका स्टेडियम में बच्चों का ओलंपिक भी आयोजित किया जाता है, जिसमें हजारों बच्चे और उनके अभिभावक दौड़ में भाग लेते हैं।

डिया डेल निनो मेक्सिको

मेक्सिको में बाल दिवस की शुरुआत सन 1925 में हुई थी। इस उत्सव की शुरुआत अल्वारो ओब्रेगॉन के राष्ट्रपति काल के दौरान हुई थी, जब प्रथम विश्व युद्ध से प्रभावित यहां के कमजोर बच्चों के कल्याण की योजनाएं बनाई जा रही थीं। मेक्सिको में बाल दिवस 30 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन रेग्युलर क्लास नहीं चलती। सारा दिन खेल खेलने, पिनाटा बनाने और तोड़ने, संगीत का आनंद लेने और बहुत सी मजेदार एक्टिविटीज करने में व्यतीत होता है। स्कूल के बाद, परिवार अपने बच्चों को संग्रहालयों, सिनेमाघरों और चिड़ियाघरों जैसी जगहों पर घुमाने ले जाते हैं, जहां आमतौर पर उस दिन बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश होता है। कुछ रेडियो और टेलीविजन प्रोग्राम होस्ट करने वाले बच्चों को अपने शो में बुलाते हैं।

यूरिनी नाल, दक्षिण कोरिया

दक्षिण कोरिया में बाल दिवस पर्व को राष्ट्रीय अवकाश होता है। इस दिन आयोजित होने वाले समारोहों में परेड, तमाशा, पार्टियां, पिकनिक और ताइक्वांडो प्रदर्शन शामिल हैं। इस सूची में पर्वतीय पद यात्राएं, नदी किनारे तंबू लगा कर रहने और मौज मस्ती करने जैसी गतिविधियां भी शामिल हैं। इस मौके पर बच्चे पारंपरिक कपड़े पहनते हैं और परिवार के साथ संग्रहालयों, पार्कों में मस्ती करने और फिल्म देखने जाते हैं। कई जगहों पर इस खास दिन के लिए बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया

जाता है। इस दिन बच्चे दक्षिण कोरियाई शिल्प की वस्तुएं बनाते हैं, जैसे कि हाथ में पकड़ने वाला सोगो ड्रम, कमल का लालटेन या सैम ता, गुक पंखा। इस अवसर पर चावल से बने कोरियाई व्यंजन, पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे मांडू (मांस और सब्जियों से बना पकौड़ा) कुजुलपैन (पैनकेक के अंदर लपेटे गए मांस और सब्जियों के स्ट्रिप्स), सोलोंगटैंग, चावल के केक जो आधे-चंद्रमा के आकार के होते हैं आदि का लुत्फ भी उठाया जाता है।

लिउयी गुओजी एर्तोंग जिए चीन

चीन में बाल दिवस सन 1949 से मनाया जा रहा

है। यहां इसे हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में, इसे बच्चों को समर्पित विशेष प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। कई पर्यटक केंद्रों पर इस दिन बच्चों के लिए प्रवेश पर कुछ छूट दी जाती है या पूरी तरह से निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। चीन में इस दिन अधिकतर परिवार अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं और पसंदीदा भोजन बनाते, खाते हैं।

ते रा ओ नगा तामारिकी न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड में बाल दिवस को 'ते रा ओ नगा तामारिकी' के नाम से जाना जाता है और यह हर साल मार्च के पहले रविवार को मनाया जाता है।

इस दिन वहां पूरे देश में मजेदार सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें खेल, कार्निवल की सवारी, भोजन, पारंपरिक हाका नृत्य और बहुत कुछ शामिल होता है। k

अपने देश में मनाते हैं चाचा नेहरू का जन्मदिन

हमारे देश में 14 नवंबर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से लोकप्रिय थे। इससे पहले सन 1964 तक बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। दरअसल, सन 1954 में संयुक्त राष्ट्र ने 20 नवंबर को बाल दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया था, जिसके चलते हर साल 20 नवंबर को ही बाल दिवस मनाया जाता था। लेकिन 1964 में जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद बाल दिवस भारत में 14 नवंबर को मनाया जाने लगा। इस दिन बच्चों के लिए सभी स्कूलों में मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाए जाते हैं और गिफ्ट भी दिए जाते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में कई जगह राज्य सरकारें भी अपने स्तर पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

बिहार के सोनपुर में सदियों से लगने वाले पशु मेले की वैश्विक ख्याति और इसका आकर्षण बरकरार है। आज से शुरू हो रहा यह मेला 10 दिसंबर तक चलेगा। इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

बरकरार है सोनपुर मेले का आकर्षण

सांस्कृतिक उत्सव

धीरज बसाक

आज का दौर इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डिजिटल पेमेंट और ई-कॉमर्स का है। यहां तक कि लोग अब पालतू पशुओं की खरीदारी के लिए भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में भी बिहार का सोनपुर पशु मेला सदियों से न सिर्फ आज भी लग रहा है बल्कि उसका पहले की तरह आकर्षण भी बरकरार है, जो इस मेले की आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता को खुद ही बखान कर रहा है।

लोकजीवन की जड़ों से जुड़ा मेला: सोनपुर का पशु मेला न केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त की दृष्टि से एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी दृष्टि से भी विशिष्ट आयोजन है, जिसकी चमक सदियों से बरकरार है। इस मेले में पशुओं का व्यापार तो

होता ही है, अपितु यह भक्ति, संस्कृति और लोक परंपराओं का भी महाकुंभ है। यह मेला बिहार ही नहीं, पूरे भारत की ग्रामीण आत्मा और उसकी जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है।

सदियों से लग रहा मेला: सोनपुर के पशु मेले का इतिहास 2,000 साल पुराना है। माना जाता है कि कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए उपयोगी पशुओं की खरीद-बिक्री यहां मौर्य काल से होती आ रही है। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर में लगने वाला यह मेला अपने पीछे कई पौराणिक आख्यानों की थाती समेटे हुए है, तो ग्रामीण जीवन की परंपरा का सबसे विश्वसनीय स्रोत भी है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार: सोनपुर का पशु मेला भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा केंद्र है। इस मेले में गाय, भैंस, बैल, घोड़े, ऊंट और हाथी बिकते हैं। कभी यह एशिया का सबसे बड़ा हाथी बाजार हुआ करता था। हालांकि आज यह हाथी बाजार बहुत छोटा और विरासत के रूप में ही मौजूद है। यह मेला स्थानीय किसानों और पशु पालकों के लिए कमाई का एक बड़ा अवसर होता है। हाल के सालों में बिहार सरकार ने इसे 'एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक केयर' के रूप में विकसित किया है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: सोनपुर पशु मेला अब भौतिक रूप में तो लगता ही है, इसका एक बड़ा और व्यापक डिजिटल संस्करण भी मौजूद है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट, सोशल मीडिया एकाउंट और ऑनलाइन बुकिंग सुविधाओं के जरिए देशभर के लोग इस मेले से न केवल डिजिटल दुनिया में रू-ब-रू होते हैं बल्कि वो डिजिटल तरीके से खरीद-फरोख्त भी करते हैं। एक तरह से यह डिजिटल और पारंपरिक लोकजीवन का संगम बन गया है।

लोक-संस्कृति की झलक: इस मेले में देश-विदेश के लाखों पर्यटक, किसान और व्यापारी सिर्फ घूमने, खरीदने-बेचने के लिए ही नहीं आते, बल्कि इस मेले की सांस्कृतिक आत्मा को जीने के लिए भी आते हैं। इस सदियों पुराने पशु मेले में आज भी हर तरफ लोक-नृत्यों, लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, हस्तशिल्प और लोकभोजनों का खुशबू भरा आकर्षण मौजूद होता है। वास्तव में इस मेले में आकर हम एक ऐसे ग्रामीण भारत से रू-ब-रू होते हैं, जिसकी चमक और खनक आज भी पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह पशु मेला भारत की ग्रामीण संस्कृति का 'ओपन एयर म्यूजियम' की तरह है। बिहार सरकार सोनपुर मेले को हेरिटेज टूरिस्ट प्लेस के रूप में भी प्रमोट करती है, जिससे स्थानीय लोगों की आय में इजाफा होता है और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर: सोनपुर का मेला सिर्फ व्यापार मेला नहीं बल्कि विभिन्न समुदायों के मिलने-जुलने,

रिश्ते बनाने और अनुभव साझा करने का मंच भी है। इसलिए ग्रामीण समाज में यह मेला सामाजिक बंधन और लोकसंवाद की परंपरा को भी प्रोत्साहित करता है। आज जब पूरी दुनिया में वर्चुअल आयोजनों की भरमार है, ऐसे समय में सोनपुर का यह लोक मेला वास्तविक सामाजिक जुड़ाव का अनुभव देता है। यहां किसान, व्यापारी, शिल्पकार, संगीतकार और लोक-कलाकार सब मिलकर आम नागरिक जीवन की सतरंगी तस्वीर पेश करते हैं। यही वजह है कि आज के इस डिजिटल युग में भी सदियों से आयोजित हो रहे सोनपुर के पशु मेले का आकर्षण जरा भी कम नहीं हुआ है। k

गाइडेंस

कीर्तिशेखर

किसी एक उम्र तक ही सीरियस होकर सफल करियर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हर एज की जरूरत के अनुसार करियर को सही दिशा दी जाए।

सक्सेसफुल करियर के लिए हर एज में सीरियस होना जरूरी

जीवन में कामयाब करियर हासिल करने के लिए सही समय क्या होता है, जब हमें इसके लिए गंभीर हो जाना चाहिए? इसके अलग-अलग जवाब हो सकते हैं। अगर हमें जीवन में अपने कामयाब करियर के लिए सजग रहना है तो जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों में अलग-अलग तरह की सजगता बहुत जरूरी है ताकि उनके साझे नतीजे में हमारा शानदार-कामयाब करियर बने।

स्कूल टाइम (10 से 16 साल): यह वह उम्र होती है, जब कोई भी छात्र अपनी पढ़ाई, पढ़े जाने वाले विषय और उन विषयों में अपनी रुझान पहचानना शुरू करता है। इस उम्र में भविष्य के कामयाब करियर के लिए सजग हो जाना जरूरी है। क्योंकि उसी के मुताबिक आपको आगे अपने पढ़े जाने वाले विषयों की स्ट्रीम (आर्ट, कॉमर्स, साइंस) तय करना होता है और जिसमें बेहतर रुझान होता है, उसी दिशा में आगे करियर विकल्प पर फोकस करना होता है। इसलिए इस उम्र में जरूरी है- पढ़ने की आदत और अनुशासन विकसित करना। आप अपनी स्ट्रीम के मुताबिक अपनी रुचि को पहचानिए और उसे उस समय के हिसाब से विकसित करने की कोशिश करें। क्योंकि उम्र का यही वह पड़ाव होता है, जब हमारे जीवन के कामयाब करियर की नींव पड़ती है।

कॉलेज/स्नातक (16 से 23 साल): करियर के लिए हमारी जिंदगी में असली और सर्वाधिक सीरियस होने का यही समय होता है, क्योंकि इसी

समय हमें डिग्री मिलती है और डिग्री के साथ-साथ हम स्किल डेवलपमेंट, इंटर्नशिप या अपने ड्रीम करियर के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। इस समय करियर को लेकर सर्वाधिक गंभीरता की इसलिए भी जरूरत पड़ती है, क्योंकि इस उम्र में हममें सबसे ज्यादा ऊर्जा होती है। इसी उम्र में हमारे पास असफल होकर दोबारा से नए सिरे से करियर शुरू करने का हौसला रहता है।

युवावस्था (23 से 30 साल): यह करियर शुरू हो जाने के बाद उसे स्थिरता प्रदान करने का समय होता है। क्योंकि अब वास्तव में करियर शुरू हो चुका होता है और उसे मजबूत और स्थिर बनाना हमारे हाथ में होता है। इसलिए इस उम्र में हमें

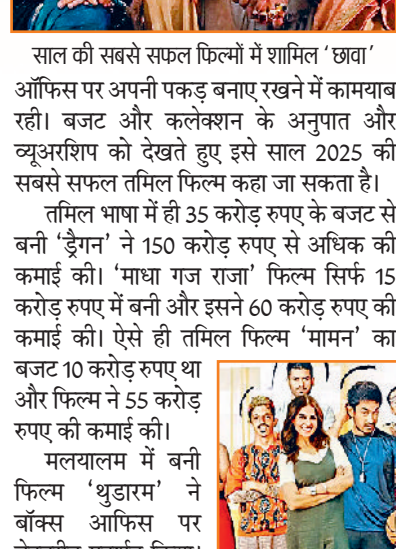

ज्यादा से ज्यादा अपने करियर के इस मोड़ पर फोकस करना चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर हमें सिर्फ करियर के लिए पढ़ाई पर ही ध्यान नहीं देना होता बल्कि नेटवर्किंग, अनुभव और सही अवसर पकड़ने की कोशिश पर होता है। क्योंकि अगर 23 से 30 के बीच हमारे करियर की दिशा अच्छी तरह से तय हो गई, तय होने के साथ-साथ इस दिशा में अगर हमने अपने आपको मजबूती से जमा लिया, तो आगे विकास और पदोन्नति आसान हो जाती है। यही वह उम्र है, जब हम एक करियर में रहते हुए इनकी मजबूती से तैयारी करते हैं। इसी उम्र में स्टार्टअप शुरू करना, अपने विषय विशेष पर रिसर्च करना या जॉब के साथ फ्रीलांसिंग के

अवसर पकड़ना होता है। इसलिए उम्र का यह पड़ाव भी करियर के लिहाज से इंपॉर्टेंट होता है।

स्थिरता-विकास (31 से 40 साल): 31वें साल से लेकर 40वें साल तक हम अपने करियर को स्थिरता प्रदान करते हुए उच्च विकास की ओर आगे बढ़ते हैं। इस दौरान कई बार हमें पीएचडी की पढ़ाई करनी होती है। जॉब में लीडरशिप पाने के लिए मैनेजमेंट कोर्स या इंटरनेशनल सर्टिफिकेशन की पढ़ाई करनी होती है। कुल मिलाकर इस उम्र में हम अपने करियर को मजबूती देकर विशेषज्ञता की ओर बढ़ते हैं और नेतृत्व हासिल करते हैं। इसलिए करियर के लिहाज से उम्र का यह पड़ाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है कि इस समय तक हमारे क्षेत्र विशेष में हमारी प्रोफेशनल पहचान बनने लगती है और हममें अपने क्षेत्र में स्थिरता हासिल करना जरूरी हो जाता है।

अनुभव का पूंजीकरण (40 साल के बाद): उम्र के इस पड़ाव में हमें अपनी अब तक की मेहनत के कई सुफल मिलते है। लेकिन कई बार हमें इस उम्र में अपना टेक्नोलॉजी स्किल बदलने नए सिरे से अपनी पढ़ाई में कुछ और जोड़ना होता है। इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए। k

सिने ट्रेंड / डी. जे. नंदन

जरूरी नहीं कि जिस फिल्म का बजट ज्यादा होगा, उसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी जानदार होगा। कई बार लो बजट में बनी फिल्में भी कमाई के मामले में कमाल कर जाती हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन

इस साल भारतीय सिनेमा में बड़े बजट की फिल्मों ने ही नहीं बल्कि छोटे बजट की अच्छी कहानियों पर बनी फिल्मों ने भी कमाल कर दिखाया। कम बजट में बनने वाली कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई तो की ही, फिल्म की कहानी और संगीत ने भी लोगों के दिलों को छुआ। मतलब साफ है, अब दर्शक ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसकी कहानी उनके दिल को छू जाए और उन्हें एकबारगी सोचने पर मजबूर कर दे।

कम बजट में बड़ी सफलता: इस साल महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, फिल्म 'सैयारा' 500 करोड़ रुपए से अधिक का बिजनेस चुकी है। इस फिल्म की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि दर्शकों को बड़े-भव्य सेट्स और महंगे लोकेशन वाली फिल्में ही नहीं, अच्छी कहानी और अच्छे संगीत पर आधारित फिल्में भी खूब पसंद आती हैं। न्यू कमर्स अहान पांडे और अनीता पड्डा को इस फिल्म ने रातों-रात स्टार बना दिया। 'सैयारा' से पहले विकी कौशल की फिल्म 'छावा' ने वर्ल्डवाइड लगभग 808 करोड़ रुपए की कमाई की थी। महज 90 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'छावा' साल 2025 की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बनी।

आमिर खान की 'सितारे जमीं पर' ने भी बेहतर प्रदर्शन किया है, जिसने लगभग 300 प्रतिशत का मुनाफा कमाया। राजकुमार राव अभिनीत 'भूलचूक माफ' महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने 90 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की कमाई की थी।

'हाउसफुल 5' का उम्मीद से कम रहा कलेक्शन

बड़े बजट के बावजूद नहीं मिली सफलता: इस साल बड़े बजट की कई फिल्मों को लेकर कयास लगाए जा रहे थे कि वो बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित होंगी। लेकिन इन बिग बजट फिल्मों ने निराश ही किया। अक्षय कुमार की 'स्काई फोर्स' खास कमाई नहीं कर पाई। सनी देओल की 'जाट' उम्मीद से काफी कम चली। सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' भी कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। शाहिद कपूर की फिल्म 'देवा', जो की मलयालम फिल्म की रीमेक है, नहीं चल पाई। कंगना रानोट की 'इमरजेंसी' से भी सफलता दूर ही रही। मल्टी स्टारर फिल्म 'हाउस फुल-5' अपना बजट निकालने में तो कामयाब रही, लेकिन फिल्म उम्मीद के मुताबिक मुनाफा नहीं कमा पाई।

'सैयारा' को मिली शानदार सफलता

अन्य भारतीय भाषाओं की सफल फिल्में: हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर नजर डालें तो क्षेत्रीय भाषाओं में बनी कई लो बजट फिल्मों ने कमाल की सफलता पाई। तमिल फिल्मों की बात करें तो सिर्फ 7 करोड़ रुपए के मामूली बजट में बनी तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की है। यह फिल्म पांच सप्ताह तक लगातार बॉक्स

साल की सबसे सफल फिल्मों में शामिल 'छावा'

ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। बजट और कलेक्शन के अनुपात और व्यूअरशिप को देखते हुए इसे साल 2025 की सबसे सफल तमिल फिल्म कहा जा सकता है।

तमिल भाषा में ही 35 करोड़ रुपए के बजट से बनी 'ड्रैगन' ने 150 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की। 'माधा गज राजा' फिल्म सिर्फ 15 करोड़ रुपए में बनी और इसने 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही तमिल फिल्म 'मामन' का बजट 10 करोड़ रुपए था और फिल्म ने 55 करोड़ रुपए की कमाई की।

मलयालम में बनी फिल्म 'थुडारम' ने बॉक्स आफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपए के बजट वाली इस फिल्म ने 235 करोड़ रुपए के आस-पास कमाई की। मलयालम भाषा की ही फिल्म 'रेखा चित्रम' सिर्फ 10 करोड़ रुपए के बजट से बनी थी। फिल्म ने उम्मीद से ज्यादा लगभग 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही 'अलप्पाबुझा जिमखाना' 12 करोड़ रुपए के

तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने किया कमाल

बजट से बनी और लगभग 70 करोड़ रुपए की कमाई की।

तेलुगू भाषा की फिल्म 'संक्रांतिकी वस्थुनम' 50 करोड़ रुपए के बजट से बनी और फिल्म ने लगभग 260 करोड़ रुपए की कमाई की।

दर्शकों को प्रभावित करती है कहानी: छोटे बजट की इन भारतीय फिल्मों के बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन यह संकेत करता है कि फिल्म का बजट और स्टारकास्ट भले ही मायने रखते हैं, लेकिन फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति भी दर्शकों को खींचने और उन्हें बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बड़े बजट की फिल्मों का कम चलना और लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक है कि वे स्टार पावर के अलावा कहानियों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं। k

'सितारे जमीन पर' ने भी की बढ़िया कमाई